राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष-46 ■ अंक-10 ■ मार्च 2025 ■ ₹10 ■ पृष्ठ-40

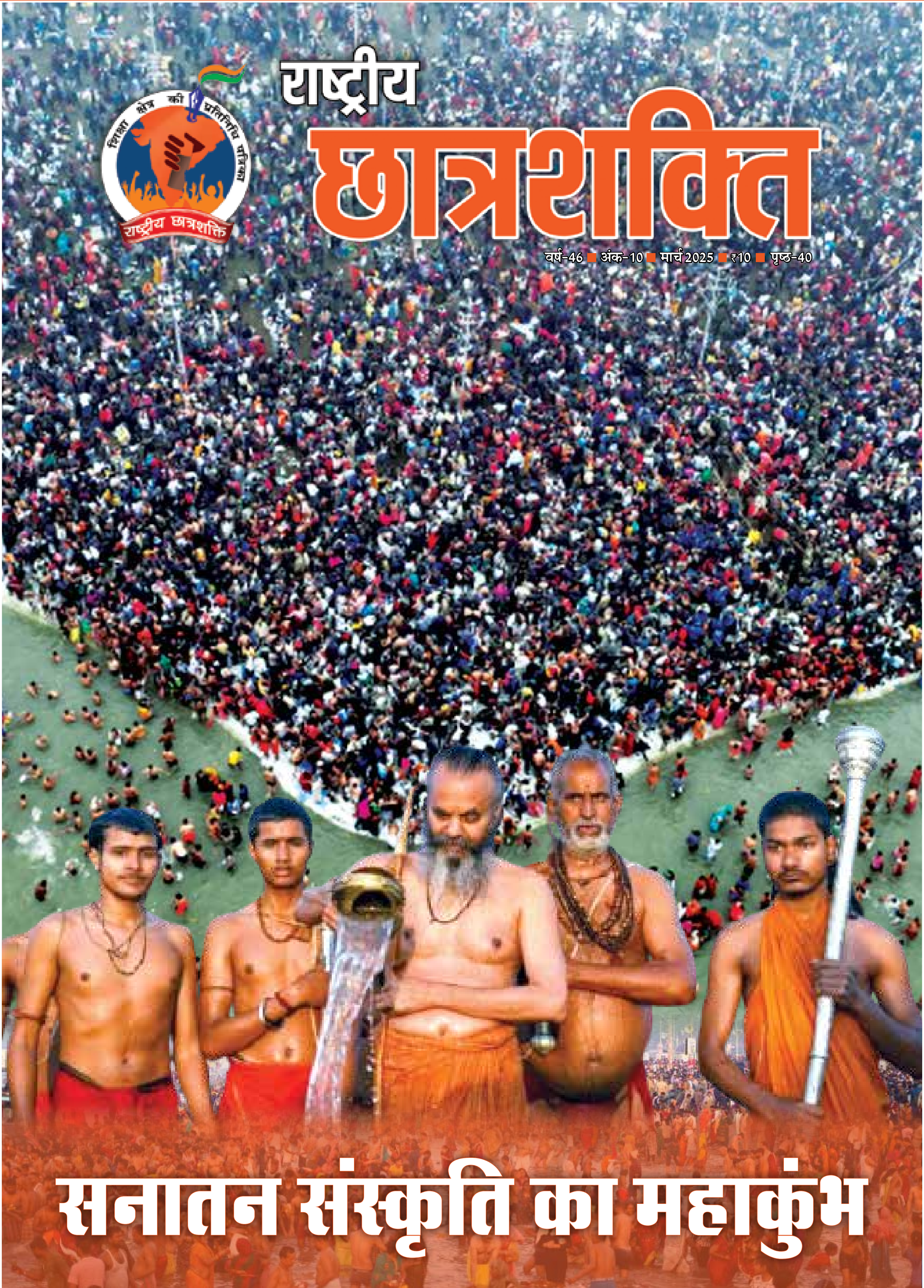

सनातन संस्कृति का महाकुंभ

राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा-2025

रांची : झारखंड के राज्यपाल संतोष गंगवार के साथ सील प्रतिनिधि एवं अभाविप पदाधिकारी

भोपाल : मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव के साथ सील प्रतिनिधि एवं अभाविप पदाधिकारी

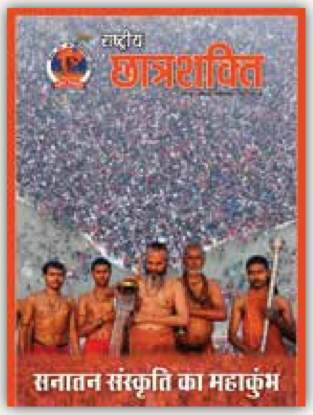

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष–46, अंक–10
मार्च 2025

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नई दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित। **संपादक** *पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए जिम्मेवार।

अबकी बार

05 **सनातन संस्कृति आस्था का महाकुंभ**

अद्भुत, अविश्वनीय, अकल्पित...। उत्तर प्रदेश की तीर्थ नगरी प्रयागराज में करोड़ों श्रद्धालुओं द्वारा व्यक्त किए जाने वाले यह शब्द, महाकुंभ की जीवंत अनुभूतियों को आम...

संपादकीय	04
वर्ष प्रतिपदा ही है नववर्ष	12
'विविध भाषा, विविध वेश, फिर भी अपना एक देश' भाव प्रकटीकरण की माध्यम बनी सील	14
विश्व की बौद्धिक चर्चाओं को आकार दे रहा है भारतीय जीवन दर्शन	17
A Grand Celebration of Young Filmmakers	20
दसवीं की परीक्षा दो बार कराने के लिए सीबीएसई का प्रारूप घोषित	21
स्वामी विवेकानंद और पंच परिवर्तन	22
दिल्ली विश्वविद्यालय में बिखरे भारतीय कलाओं के सांस्कृतिक रंग	25
Cow Protection in India : Constitutional Provisions and Legal Perspectives	26
अभाविप ने किया तिरंगा यात्रा का आयोजन	28
नेपाली विद्यार्थियों को परिसर से बाहर करने का आदेश अनैतिक एवं अमानवीय : अभाविप	29
Unity and Integrity of the Country Threatened by Divisive Narratives	30
शिक्षा विरोधी प्रदेश सरकार के विरुद्ध अभाविप ने छेड़ा अभियान	34
संभाजी राजे के अदम्य शौर्य की वीर गाथा है फिल्म 'छावा'	36
संविधान की मूल प्रामाणिक प्रति ही मिले अब बाजार में	37
छात्राओं के शोषण तथा मतांतरण के विरुद्ध अभाविप का राज्यव्यापी प्रदर्शन	38

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

प्रयागराज में महाकुंभ का आयोजन अपने संपूर्ण वैभव के साथ सम्पन्न हुआ। इस बीच अनेक वांछित-अवांछित कीर्तिमान बने। सफलता का मूल्यांकन आध्यात्मिक ऊंचाई, सामाजिक सौहार्द्र, समरसता, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों तथा पांथिक आयोजनों के साथ ही लागत और लाभ के आधार पर भी हुआ। सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई सुविधाओं की सर्वत्र सराहना हुई। सेलेब्रिटी पुण्यात्माओं के कुंभ स्नान के चित्रों से समाचार पत्र सजे रहे, सोशल मीडिया पर उन्हें लाखों लाइक और शेयर प्राप्त हुए।

कुंभ भारतीय चिंतन परम्परा और चेतना के प्रवाह का अनुपम प्रकटीकरण है। हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक के अतिरिक्त भी अनेक स्थानों पर संगम तटों पर नक्षत्रों के पवित्र संयोगों से जोड़ कर ऐसे अनेक छोटे-बड़े आयोजन होते रहे हैं। नैमिषारण्य में लाखों ऋषियों द्वारा एकत्र होकर लोक-कल्याण के लिए किया गया विमर्श भारतीय स्मृति में अंकित है।

शाश्वत मूल्यों तथा सांस्कृतिक अवधारणाओं के आलोक में वर्तमान के प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए विद्वज्जनों का संगम तट पर एकत्र होना और उनके सान्निध्य में बैठकर सामाजिक प्रश्नों के समाधान की कला सीख कर भविष्य की रूप-रेखा निश्चित करने का संकल्प लेकर, भारत के सांस्कृतिक विस्तार से लोगों का उमड़ आना ही कुंभ का प्रकट रूप है। शासन द्वारा उपलब्ध सुविधाओं का लाभ लेकर अबकी बार विश्व की आधी हिन्दू जनसंख्या इस ऐतिहासिक आयोजन की साक्षी बनी।

भविष्य की रूप-रेखा निश्चित करने का संकल्प लेकर ,भारत के सांस्कृतिक विस्तार से लोगों का उमड़ आना ही कुंभ का प्रकट रूप है।

एक ओर जहां भारत अपने आपको पुनर्अभिव्यक्त करने की साधना में लीन था, वहीं दूसरी ओर विघ्नसंतोषी शक्तियां भी भारत की इस सात्विक आस्था के कारण हुए सांस्कृतिक जागरण को अपने लिए खतरा मान कर संभावित एकात्मता को तोड़ने के लिए सक्रिय हुई। उन्होंने उत्तर-दक्षिण का भेद, भाषा विवाद को हवा, लोकसभा के परिसीमन को लेकर आशंका तथा नई शिक्षा नीति के विरोध जैसे मोर्चे खोल दिए। महाकुंभ में सनातन का जो उज्ज्वल रूप विश्व के सामने आया, उस सनातन विचार पर ही आक्रमणों की शृंखला चल पड़ी और उसे बीमारी एवं जहर जैसा बताते हुए उसे समूल विनष्ट करने का सार्वजनिक आह्वान भी किया जाने लगा। इसका क्रियान्वित रूप स्थान-स्थान पर होली के कार्यक्रमों पर होने वाले आक्रमणों के रूप में देखा जा सकता है।

ऐसे में स्मरण आता है बाबासाहब भीमराव रामजी आंबेडकर का। संविधान सभा में उन्होंने कहा, "संविधान की आलोचना वही कर रहे हैं जो सर्वहारा की तानाशाही के सिद्धांत पर आधारित संविधान चाहते हैं, जिससे अगर वह सत्ता में आते हैं तो संविधान उन्हें बिना किसी मुआवजे के सभी निजी संपत्ति का राष्ट्रीयकरण या समाजीकरण करने की स्वतंत्रता दे तथा मौलिक अधिकार निरपेक्ष और बिना किसी सीमा के होने चाहिए ताकि अगर उनका दल सत्ता में आने में विफल हो जाता है तो उन्हें न केवल आलोचना करने की, बल्कि राज्य को उखाड़ फेंकने की भी पूरी स्वतंत्रता हो।" दशकों पहले आज की परिस्थितियों का पूर्वानुमान लगाने तथा संविधान में उसके उपाय रख देने जैसी दूरदर्शिता दिखाने वाले भारतरत्न डा. आंबेडकर का उनके जन्मदिवस पर पुण्य-स्मरण।

भारतीय कालगणना के अनुसार नूतन संवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से वासन्तिक नवरात्र तथा विक्रम संवत 2082 का प्रारंभ हो रहा है। देश के विभिन्न हिस्सों में वर्ष प्रतिपदा, चेटीचंड, गुड़ी पड़वा आदि नामों से आयोजित होने होने वाले पर्व के साथ ही, संत श्री झूलेलाल और डा. केशव बलिराम हेडगेवार जैसे महापुरुषों की जयंती की हार्दिक मंगलकामनाएं।

शुभकामना सहित,

आपका
संपादक

■ संजय दीक्षित

अद्भुत, अविश्वनीय, अकल्पित...। उत्तर प्रदेश की तीर्थ नगरी प्रयागराज में करोड़ों श्रद्धालुओं द्वारा व्यक्त किए जाने वाले यह शब्द, महाकुंभ की जीवंत अनुभूतियों को आम जनमानस के सामने रखने के लिए पर्याप्त हैं। त्रिविध ताप-पाप नाशिनी त्रिवेणी अर्थात संगम तट पर सनातन श्रद्धा, आस्था एवं सात्विकता का ज्वार 45 दिन तक दिखाई दिया। महाकुंभ में अमृत (शाही) एवं प्रमुख स्नान वाले दिन में करोड़ों आस्थावानों ने मां गंगा में डुबकी लगाकर स्वयं को धन्य अनुभव किया। प्राचीन सनातन परम्पराओं के अनुपालन के साथ होने वाले महाकुंभ से धार्मिक, पौराणिक और खगोलीय स्थितियां भी जुडी हुई हैं। चूंकि तीर्थराज प्रयाग स्थित संगम तट पर महाकुंभ की महत्ता अलग ही है, इसीलिए देश-विदेश से करोड़ों श्रद्धालु संगम तट पर पहुंचे और श्रद्धा भाव से मां गंगा के जल में स्नान करके आध्यात्मिक शांति का अनुभव किया। सनातन की नई चेतना का संचार करने वाले महाकुंभ का आरंभ पौष पूर्णिमा (13 जनवरी) और समापन महाशिवरात्रि (26 फरवरी) के पवित्र स्नान से हुआ।

सनातन वैचारिकी में महाकुंभ का पवित्रता एवं सांस्कृतिक दृष्टि में विशेष महत्व है। महाकुंभ एक ऐसा पवित्र समागम और आध्यात्मिक यात्रा है, जो मानव अस्तित्व के मूल में उतरती है। प्राचीन हिंदू पौराणिक कथाओं में उल्लिखित, महाकुंभ एक गहन आंतरिक अर्थ रखता है, जो आत्मबोध, शुद्धीकरण और आध्यात्मिक प्रबोधन की शाश्वत खोज की प्रतीकात्मक यात्रा के रूप में अभिव्यक्त होता है। प्रयाग में आयोजित 45 दिवसीय महाकुंभ के दौरान तीन अमृत स्नान में लाखों संतों ने धर्म ध्वजा फहरा कर सनातन आस्थावानों का नेतृत्व किया और धार्मिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, सामाजिक, सांस्कृतिक दर्शन को पुनः स्मरण कराया। सनातन आस्था से ओत-प्रोत

विदेशी युवाओं ने जानी महाकुंभ की महत्ता

महाकुंभ के दौरान भारतीय संस्कृति और परंपराओं से साक्षात्कार कराने के लिए विश्व छात्र एवं युवा संगठन (डब्लूओएसवाई) ने पच्चीस देशों के एक सौ बीस से अधिक युवा प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया। सभी युवा प्रतिनिधियों ने महाकुंभ मेले का भ्रमण करने के साथ ही साधु-संतों से मिलकर आध्यात्म के विभिन्न भावों का प्रत्यक्ष रूप से जाना और समझा। यह सभी प्रतिनिधि डब्लूओएसवाई द्वारा प्रयाग स्थित मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान में 'संस्कृति एवं संधारणीयता पर वैश्विक संवाद' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए प्रयागराज पहुंचे थे। सम्मेलन में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री वीरेंद्र सिंह सोलंकी ने महाकुंभ के इतिहास और महाकुंभ क्षेत्र में संधारणीयता सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों को सामने रखा। इलाहाबाद विश्वविद्यालय की कुलपति प्रा. संगीता श्रीवास्तव ने छात्र संवाद के माध्यम से सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर बल दिया, जबकि राज्य सरकार के अपर महाधिवक्ता अशोक मेहता एवं अधिवक्ता राहुल त्यागी ने प्राचीन भारतीय न्यायशास्त्र की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए प्राचीन भारतीय न्यायशास्त्र, संधारणीयता और वैश्विक न्याय के सामंजस्य पर व्याख्यान दिया। 'सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण : भविष्य के लिए अतीत को संजोना' विषय पर शरद विवेक सागर ने विचार व्यक्त किए। डब्लूओएसवाई के अध्यक्ष डा. नितिन शर्मा ने सांस्कृतिक सहयोग और संधारणीयता के प्रयासों की आवश्यकता पर बल देते हुए युवाओं को इन क्षेत्रों में सक्रिय भागीदारी की प्रेरणा दी।

विशाल जनसमूह ने धर्म, संस्कृति, परम्पराओं, संस्कारों, अनुष्ठानों एवं आध्यात्मिकता से विश्व समाज को व्यापक एवं सकारात्मक सन्देश भी दिया। गंगा तट पर चार हजार हेक्टेयर वाले मेला क्षेत्र में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं के लिए आवास, भोजन, सुरक्षा, निगरानी सहित अन्य व्यवस्थाओं में आधुनिक तकनीकी एवं डिजिटल उपकरणों का उपयोग किए जाने के कारण सुचारु व्यवस्था के साथ संपन्न हुए महाकुंभ ने भविष्य में सनातन की व्यापकता की नई राह को भी सामने रखा है।

स्वतन्त्र भारत में ऐसा पहली बार हुआ, जब महाकुंभ पर्व में सार्वजनिक रूप से राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सहित अन्य संवैधानिक पदों पर बैठे राजनेताओं ने संगम तट पहुंचकर गंगा स्नान करके सनातन आस्था, श्रद्धा, विश्वास को नमन किया। फिल्म, खेल, उद्योग जगत से जुड़े व्यक्तियों के साथ ही वैश्विक स्तर पर कई प्रख्यात लोग भी संगम में डुबकी लगाकर महाकुंभ की व्यवस्थाओं की सराहना करते दिखाई दिए। हर कोई अभिभूत था क्योंकि सनातन पर्व पर जनसमाज की आस्था का ऐसा महासागर इससे पहले किसी ने नहीं देखा था। विश्लेषकों के अनुसार सनातन पर्व महाकुंभ में अमेरिका से दो-गुना और विश्व के सौ से अधिक देशों की कुल जनसंख्या से अधिक श्रद्धालु सहभागी बने। महाकुंभ में वैश्विक भागीदारी इसके सार्वभौमिक आकर्षण को रेखांकित करती है।

स्थापित हुए कई कीर्तिमान

अबकी बार संपन्न महाकुंभ दुर्लभ था, जिसका परिणाम प्रयागराज पहुंचे 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं के रूप में देखा गया, जिससे यह विश्व का सबसे बड़ा जन-समागम बन गया। खगोलीय स्थितियां वही थी, जो 144 वर्ष पूर्व आयोजित महाकुंभ के समय थी। यह भी एक ऐसा कारण रहा, जिसके परिणामस्वरूप भारत के कोने-कोने से लेकर विभिन्न देशों के लाखों लोग प्रयाग पहुंचे और

‘एक थाली-एक थैला’ अभियान से संघ ने पर्यावरण सुरक्षा का दिया सन्देश

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने महाकुंभ के दौरान पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से ‘एक थाली-एक थैला’ अभियान चलाया। यह एक शून्य-बजट की पहल थी, जिसे सामाजिक सहभगिता द्वारा सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। अभियान ने प्रभावी रूप से स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण का संदेश दिया। अभियान के माध्यम से पर्यावरण के अनुकूल महाकुंभ के माध्यम से लाखों परिवारों को जागरूक किया गया, जिससे नदियों और झीलों जैसे स्थानीय जल निकायों में स्वच्छता बनाए रखने के महत्व पर प्रकाश डाला गया। जानकारी के अनुसार अभियान के दौरान देश भर से 14,17,064 थाली, 13,46,128 थैले एवं 2,63,678 गिलास का संग्रह किया गया। इसमें 2,241 संस्थाओं की सहभागिता रही। संघ स्वयंसेवकों की सक्रियता के कारण महाकुंभ में प्लास्टिक से बने लगभग 85 प्रतिशत पत्तल-दोने की खपत और लगभग 29 हजार टन कचरे में कमी दर्ज की गई। थालियों में भोजन करने के कारण जूठन में भी 70 प्रतिशत कमी आई और खर्च में लाखों रुपए की बचत हुई। पर्यावरण जागरूकता के लिए हरित कुंभ-स्वच्छ कुंभ अभियान चलाया गया। इस पहल ने सार्वजनिक आयोजनों के लिए “बर्तन बैंकों” की संभावना के द्वार खोल दिए हैं। इससे इस दूरगामी विचार को सुखद प्रोत्साहन और समाज में स्थायी और प्राचीन बचत की प्रथाओं को बढ़ावा मिलेगा।

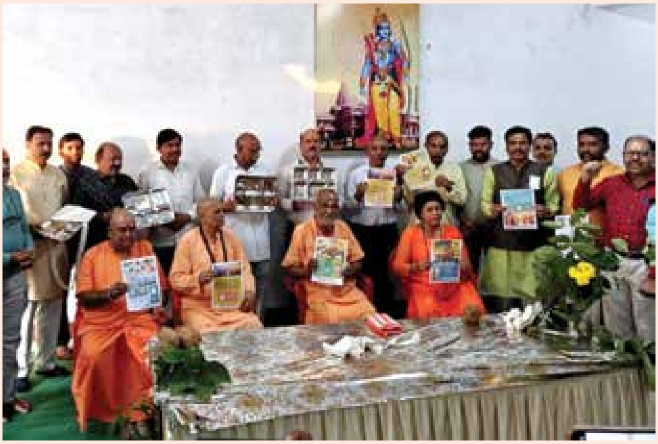

महाकुंभ सर्वाधिक जनसमूह की सहभागिता वाला आयोजन बन गया। स्वच्छता एवं पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से भी मील के पत्थर स्थापित हुए। सफाईकर्मियों ने मेला क्षेत्र की मिलकर सफाई करने का नया कीर्तिमान बनाया। यह कीर्तिमान गंगा नदी से लेकर दस किलोमीटर में फैले मेला क्षेत्र में 19 हजार सफाईकर्मियों द्वारा एक साथ झाड़ू लगाकर बनाया गया। इस कीर्तिमान को गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड्स में शामिल किया गया है। वास्तव में देखा जाए तो यह कीर्तिमान एवं सफाईकर्मियों की मेहनत स्वच्छता अभियान को सशक्त करने वाले उत्कृष्ट प्रतीक के रूप में सामने आई है। इसी तरह मां गंगा की सफाई के लिए 360 सफाईकर्मियों ने जो अभियान चलाया, वह भी कीर्तिमान के रूप में दर्ज किया गया।

महाकुंभ में त्रिवेणी संगम को स्वच्छ, निर्मल बनाने के लिए न केवल मानवीय, बल्कि आधुनिक तकनीकी का भी उपयोग किया गया। साथ ही पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता के साथ मां गंगा की पवित्रता बनाए रखने, कचरा प्रबंधन और प्लास्टिक मुक्त क्षेत्र बनाने की दिशा में करोड़ों श्रद्धालुओं का सहयोग आम जनमानस में बढ़ती जागरूकता के रूप में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

महाकुंभ में एक अन्य कीर्तिमान हैंड प्रिंटिंग पेंटिंग में बना। गंगा तट पर लगाए गए कैनवास में 10,109 हजार श्रद्धालुओं ने मात्र आठ घंटे में अपने पंजे की छाप लगाकर यह कीर्तिमान बनाया। महाकुंभ के दौरान हजारों लोगों को नेत्र ज्योति प्रदान करने का कार्य भी इतिहास में लिखा गया है। यहां आयोजित नेत्रकुंभ में चार सौ चिकित्सकों ने दो लाख 38 हजार श्रद्धालुओं के नेत्रों की जांच की और 1.63 लाख लोगों को निःशुल्क चश्मा प्रदान किया।

महाकुंभ और संत परंपरा

महाकुंभ में त्रिवेणी संगम पर आस्था की डुबकी लगाने के लिए पहुंचे संतों के तेरह प्रमुख अखाड़ों में सात अखाड़े

बौद्धों का प्रथम समागम

■ डा. चंदन कुमार

महाकुंभ के इतिहास में पहली बार एक समर्पित 'बौद्ध विशेष समागम' का आयोजन प्रयागराज के पवित्र संगम क्षेत्र में किया गया। यह शिविर भगवान बुद्ध के 'एष धम्मो सनंतनो' सन्देश अर्थात सनातन परंपरा की निरंतरता को जनमानस में प्रकाशित करने के लिए आयोजित किया गया। महाकुंभ के व्यापक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विमर्श में बौद्ध मत को सम्मिलित करने का यह एक अभूतपूर्व प्रयास रहा।

समागम में रूस, कोरिया, वियतनाम, म्यांमार, भूटान, श्रीलंका, नेपाल, थाईलैंड और मंगोलिया सहित दस देशों के लगभग तीन सौ भिक्षु एवं भिक्षुणियों ने हिस्सा लिया। उनकी उपस्थिति ने न केवल इस महाकुंभ की आध्यात्मिक विविधता को समृद्ध किया, बल्कि यह भी प्रदर्शित किया कि बुद्ध के उपदेश आज भी वैश्विक स्तर पर प्रासंगिक हैं। मुख्य संगम मार्ग पर स्थापित भगवान बुद्ध की बीस फीट की प्रतिमा ने सभी श्रद्धालुओं को करुणा, मैत्री और आनंद को अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया। लगभग दो लाख श्रद्धालु बौद्ध शिविर में आए और लगभग अस्सी लाख लोगों ने भगवान बुद्ध की प्रतिमा के दर्शन किए, जो महाकुंभ का एक महत्वपूर्ण आकर्षण बन गई।

समागम के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बौद्ध शिविर के लिए भूमि का आवंटन हिमालय बौद्ध सांस्कृतिक संरक्षण सभा (दिल्ली) को किया गया। गत 13 जनवरी से 26 फरवरी के मध्य हुआ आयोजन अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ, राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय, अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक अध्ययन केंद्र, तत्वम, अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध शोध संस्थान एवं उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संयुक्त रूप से संपन्न हुआ।

बौद्ध विशेष समागम के दैनिक कार्यक्रम में बौद्ध भिक्षुओं द्वारा परंपरागत दैनिक पूजा का अनुष्ठान, विपश्यना ध्यान का आयोजन हुआ। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी महत्वपूर्ण रहा, जिसने भारत की हिमालय संस्कृति को प्रदर्शित किया। समागम के विशेष आयोजनों में बौद्ध नालंदा परंपरा के विशेष अनुष्ठाओं में अग्नि पूजन (शुद्धिकरण पूजा) एवं

तोरग्या पूजन श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केंद्र रहे। यह सभी अनुष्ठान कर्नाटक से आए बौद्ध भिक्षुओं द्वारा संपन्न किए गए।

विशेष आयोजनों में 'चाम तंत्र नृत्य' टूटिंग एवं अरुणाचल प्रदेश के नालंदा बौद्ध 'निग्मा' परंपरा द्वारा आयोजित किया गया। चाम तंत्र नृत्य नालंदा बौद्ध के निग्मा परंपरा से जुड़ा एक आध्यात्मिक नृत्य है, जिसे विशेष रूप से निग्मा के भिक्षु करते हैं। यह नृत्य योग, तंत्र और प्रतीकवाद का संयोजन है, जो धर्म की विजय, नकारात्मक शक्तियों के नाश और आध्यात्मिक जागृति का प्रतिनिधित्व करता है। समागम का विशेष आकर्षण का केंद्र रेत मंडल भी रहा, जो 'कालचक्र' विषय पर आधारित था। रेत मंडल का निर्माण नालंदा परंपरा के गेलुपा मत के भिक्षुओं द्वारा किया गया। बौद्ध परंपरा में रेत मंडल ब्रह्मांड की अनित्यता और परिवर्तनशीलता को दर्शाता है। निर्माण के बाद इसे विसर्जित कर दिया जाता है, जो जीवन और समय की अस्थिरता का प्रतीक है।

समागम के दौरान केंद्रीय आयुष मंत्रालय द्वारा दस दिवसीय सोवा रिग्पा निशुल्क चिकित्सा शिविर भी लगाया गया। शिविर को राष्ट्रीय सोवा रिग्पा संस्थान (लेह) के चिकित्सकों ने संचालित किया। भारत सहित नेपाल, भूटान रूस, स्वीडन, अमेरिका, जर्मनी, चेक गणराज्य, यूक्रेन, नीदरलैंड आदि देशों से आए दो हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने शिविर का लाभ उठाया।

समागम में दर्शन के अध्ययन में पाली, संस्कृत और भोटी भाषाओं के महत्व पर ध्यान केंद्रित संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। भगवान बुद्ध की शिक्षाओं को मानव समाज में विस्तार और इसके प्रयास को ध्यान में रखकर हुए इसमें बौद्ध विषयक शिक्षाविदों ने भाग लिया। संगोष्ठी इसलिए भी महत्वपूर्ण रही क्योंकि केंद्र सरकार ने पाली भाषा को शास्त्रीय भाषा घोषित किया है। पाली न केवल भारत, अपितु एशियाई देशों की भाषा एवं संस्कृति को गत दो हजार वर्षों से प्रभावित कर रही है। भव्यता के साथ संपन्न हुए समागम के समापन समारोह में राष्ट्रीय सोवा रिग्पा संस्थान (लेह) के निदेशक डा. पद्मा ग्युरमेट, अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ के महानिदेशक अभिजीत हलदर, अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ के महासचिव शार्तसे खेंसुर रिनपोछे वांगचुक छोर्डेन सहित कई अन्य गणमान्य लोगों ने हिस्सा लिया। ■

शैव संप्रदाय के, तीन बैरागी वैष्णव संप्रदाय के और तीन अन्य अखाड़े उदासीन संप्रदाय के रहे। भारतीय संस्कृति के जीवंत स्वरूप को दर्शाने वाले अखाड़ों में पहुंचे हजारों साधु-संतों के साथ, पहली बार महाकुंभ में पूर्वोत्तर के लिए समर्पित एक विशेष शिविर लगाया गया। यहां पूर्वोत्तर की प्राचीन वैष्णव परंपरा को सामने रखने वाले 22 संतों के साथ ही अन्य श्रद्धालुओं के लिए आवश्यक व्यवस्था की गई। पूर्वोत्तर के कई संत पहली बार महाकुंभ में आए और उन्होंने पहली बार महाकुंभ क्षेत्र में कामाख्या देवी माता मंदिर की प्रतिकृति स्थापित की।

बौद्ध परंपरा की सभी शाखाओं के बौद्ध भिक्षु, भंते एवं लामा भी पहली बार पहुंचे और प्रयागराज में बौद्ध विशेष संगम का आयोजन किया। महाकुंभ में हिन्दू मत के साधु-संतों, आध्यात्मिक विभूतियों के साथ ही विविध पंथ और परंपरा से जुड़े सभी मत-संप्रदायों के संतों एवं आचार्यों का समागम हुआ। वनवासियों में धर्म परम्परा एवं संस्कारों को बनाए रखने वाले संतों की भागीदारी भी महाकुंभ में हुई। महाकुंभ के दौरान विभिन्न अखाड़ों को आठ हजार से अधिक नगा सन्यासी मिले, तो लगभग उन्नीस सौ अनुसूचित जाति एवं जनजाति सन्यास परम्परा का अंग बन गए। साथ ही लगभग साढ़े बारह सौ महिलाओं ने भी सन्यास की दीक्षा ली।

महाकुंभ के दौरान चिंतन, मनन एवं संवाद में धर्म, संस्कृति एवं सामाजिक सरोकारों पर गहन विमर्श हुआ। विमर्श के केंद्र में पर्यावरण एवं पर्यावरण संरक्षण का विषय भी रहा, जो पूरे विश्व के मानव समाज के लिए सबसे बड़ी चिंता का कारण बन चुका है। संत समागम में देशभर के विभिन्न मत, पंथ एवं सम्प्रदायों से जुड़े साधु-संतों ने सामाजिक समरसता पर मंथन करते हुए एक स्वर में 'न हिन्दू पतितो भवेत' का उदघोष करते हुए एकता, समता, समानता एवं समरसता का संदेश, वैश्विक मानव समाज को दिया।

सामाजिक एकता एवं समरसता

महाकुंभ के दौरान आए करोड़ों श्रद्धालुओं के मध्य जाति-पांति, मत, संप्रदाय जैसी सामाजिक भेदभाव उत्पन्न करने वाली मानसिकता किसी भी स्तर पर नहीं दिखाई दी। महाकुंभ में हिस्सा लेने के लिए न तो किसी श्रद्धालु को निमंत्रण दिया गया और न ही औपचारिक रूप से बुलाया

फार्माविजन ने किया विशेष स्वास्थ्य प्रशिक्षुता कार्यक्रम का आयोजन

प्रयागराज में संपन्न महाकुंभ में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के आयाम फार्मा विजन ने विशेष स्वास्थ्य प्रशिक्षुता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस पहल का उद्देश्य महाकुंभ में आए करोड़ों श्रद्धालुओं को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना और फार्मेसी छात्रों को व्यावहारिक अनुभव देना था। 42 दिन का यह प्रशिक्षुता कार्यक्रम न केवल छात्रों के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण का एक अनूठा अवसर बना, बल्कि यह समाज के लिए भी अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुआ। गत 14 जनवरी से 24 फरवरी तक चले प्रशिक्षुता कार्यक्रम के माध्यम से फार्मेसी छात्रों ने स्वास्थ्य सेवा में अपनी भूमिका को गहराई से समझा और वास्तविक परिस्थितियों में काम करने का अनुभव प्राप्त किया।

अभाविप के अनुसार प्रशिक्षुता कार्यक्रम स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने और सामाजिक सेवा में फार्मेसी छात्रों की भूमिका को सशक्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ। फार्माविजन का यह प्रयास भविष्य में स्वास्थ्य सेवा से जुड़ने और अधिक अवसर प्रदान करने के लिए प्रेरणा स्रोत बनेगा। प्रशिक्षुता कार्यक्रम के लिए सभी राज्यों से 1,150 से अधिक फार्मेसी छात्रों ने ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यम से पंजीकरण किया था। अत्यधिक रुचि और उत्साह को देखते हुए, प्रशिक्षुता कार्यक्रम को छह हिस्सों में विभाजित किया गया, जिसमें कुल 184 छात्रों ने सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। इसमें महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब, दिल्ली, बिहार, राजस्थान, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा और कर्नाटक राज्यों से आए छात्रों ने सहभागिता की। छात्रों ने कुंभ मेले के विभिन्न स्थलों पर स्वास्थ्य सेवा प्रबंधन, प्राथमिक उपचार, औषधि वितरण, स्वास्थ्य सर्वेक्षण, स्वच्छता जागरूकता और अन्य गतिविधियों में योगदान दिया। कार्यक्रम के दौरान देश के कई फार्मेसी कालेजों के प्राचार्य, प्राध्यापक, फार्मेसी क्षेत्र के कई विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षु छात्रों का मार्गदर्शन किया गया।

गया। इसके बाद भी जाति, भाषा, प्रान्त, परम्परा के आधार पर समाज विभाजक नकारात्मक विचारों से परे होकर समाज के सभी वर्गों की सहभागिता रही। सनातन आस्था पर दृढ़ और श्रद्धा एवं पूज्य भाव से हर श्रद्धालु संगम तक पहुंचा और गंगा स्नान किया। गंगा तट पर जुटे साधु-संतों ने वैचारिक ज्ञान, प्रवचन एवं भजन के माध्यम से मानव समाज को सकारात्मक चिंतन, आध्यात्मिक जीवन पद्धति एवं कल्याण के भाव से जीवन जीने का सन्देश दिया।

सफल प्रबंधन और आर्थिक गति

महाकुंभ के आयोजन ने एक सफल प्रबंधन नीति एवं रणनीति को भी सामने रखा। महाकुंभ की तैयारियों के समय केंद्र सरकार से लेकर उत्तर प्रदेश सरकार ने यह उम्मीद नहीं की थी कि 45 दिनों में 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालु प्रयागराज पहुंचेगें। लेकिन पहले अमृत स्नान के बाद लगातार श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ती चली गई। परिणामस्वरूप प्रयागराज तक पहुंचने वाले प्रत्येक मार्ग पर वाहनों की भीड़ और जाम की स्थिति बनी। रेलवे स्टेशन पर भीड़ पर नियंत्रण के लिए कई बार प्लेटफार्म को बंद करना पड़ा। प्रयागराज हवाई अड्डे पर 45 दिनों के दौरान दो हजार से अधिक विमान पहुंचे, जिसमें शीर्ष व्यवसायियों के अलावा राजनेता, फिल्म कलाकार, उच्चाधिकारी एवं विदेश से आए अतिथि शामिल थे।

महाकुंभ मेला क्षेत्र की प्रशासनिक व्यवस्था में

आधुनिक तकनीकी का समावेश करके कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भीड़ प्रबंधन तंत्र, वास्तविक छवि पर केंद्रित ड्रोन निगरानी तंत्र, पूर्वानुमान विश्लेषण, कुशल यातायात प्रबंधन, महाकुंभ समर्पित मोबाइल एप्लीकेशन, सौर ऊर्जा संचालित विद्युत उपकरण और इलेक्ट्रिक वाहनों का उपयोग करके श्रद्धालुओं की यात्रा को सुगम बनाया गया। सुरक्षा की दृष्टि से पुलिसकर्मियों के साथ ही अन्य केंद्रीय बलों के सत्तर हजार से अधिक सुरक्षाकर्मी तैनात किए गए, जिनकी भूमिका की सर्वत्र प्रशंसा हुई। व्यवस्था की दृष्टि से यह महाकुंभ स्मार्ट सिटी प्रबंधन, डिजिटल क्रांति एवं भारतीय वैश्विक तकनीकी प्रभुत्व का उदाहरण बनकर भी सामने आया।

महाकुंभ के दौरान हुई आर्थिक गतिविधियों से जहां हजारों लोगों को अप्रत्याशित लाभ हुआ, वहीं पूरे आयोजन के दौरान लगभग तीन लाख करोड़ रुपए की आर्थिकी का अनुमान व्यक्त किया जा रहा है। आयोजन के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने 7,500 करोड़ रुपए खर्चकर प्रयागराज और उसके पास के क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे का निर्माण सहित प्राचीन अक्षयवट, सरस्वती कूप और महर्षि भारद्वाज से जुड़े बारह गलियारों का विकास कार्य किया। श्रद्धालुओं के सतत प्रवाह ने हजारों करोड़ रुपए की आय का सृजन किया, जिसमें व्यक्तियों, संस्थाओं के साथ ही सरकार की आय में वृद्धि हुई।

समापन के बाद सफाईकर्मी, नाव चालक, पुलिस, परिवहन सहित अन्य विभागों के कर्मचारियों के लिए राज्य सरकार द्वारा बोनस सहित अन्य सुविधाएं देने की घोषणा ने प्रबंधन सहयोगियों में नई ऊर्जा एवं उत्साह का संचार किया। प्राचीन सामाजिक-सांस्कृतिक पर्वों के प्रबंधन एवं समन्वय की परम्परा के साथ संपन्न महाकुंभ की गाथा विदेशी मीडिया में प्रकाशित समाचार एवं लेख वैश्विक मानव समाज को सुना रहे हैं।

उजागर हुए सनातन विरोधियों के चेहरे

आध्यात्मिक सनातन पर्व महाकुंभ के आयोजन के दौरान सनातन हिन्दू का छद्म आवरण लपेट कर बैठे सनातन विरोधी भी खुल कर सामने आए। अपनी कुत्सित वैचारिक, धार्मिक एवं राजनीतिक मानसिकता का परिचय देते हुए किसी ने महाकुंभ आयोजन पर प्रश्न उठाए तो किसी ने हिन्दू धर्म को अपमानित करने वाले शब्दों का प्रयोग करके अपनी भड़ास निकाली। कथित जननेताओं सहित वामपंथी एवं अन्य सनातन विरोधी तत्वों ने महाकुंभ की उपयोगिता, वैधता, प्रासंगिकता, आस्था, मूल्य, श्रद्धा को खंडित करने में कोई कमी नहीं छोड़ी। आम जनमानस के बीच दुष्प्रचार के लिए भ्रामक एवं असत्य तथ्यों के साथ ही विदेशी वीडियो का प्रयोग किया गया। वोट बैंक की राजनीति के लिए खुलकर सामने आए सनातन विरोधी तत्वों ने भारत के सामाजिक जीवन में अपनी उपयोगिता पर स्वयं ही कई प्रश्न चिह्न लगा लिए हैं।

यह स्वाभाविक है कि जनसामान्य से जुड़े ऐसे महा-आयोजनों के दौरान समस्याएं भी सामने आती हैं और कभी कोई द्रवित करने वाली घटना भी घटित होती है। महाकुंभ के दौरान मौनी अमावस्या के दिन प्रातःकाल भगदड़ में 30 श्रद्धालुओं की मौत हो गई, जबकि 60 अन्य घायल हो गए। ऐसा ही नई दिल्ली रेलवे स्टेशन में हुआ, जहां भगदड़ के बीच 18 श्रद्धालुओं की मौत हुई और कई घायल हो गए। दोनों घटनाएं क्यों और किन परिस्थियों में हुईं? इसकी जांच की जा रही है। लेकिन घटना के बाद सनातन विरोधियों ने गुमराह करने वाला प्रचार किया, लेकिन श्रद्धालुओं पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा।

महाकुंभ के आयोजन से यह तथ्य फिर सामने आ गया है कि देश में मौजूद सनातन विरोधियों की आड़ लेकर वैश्विक स्तर पर सक्रिय भारत विरोधी तंत्र तेजी के साथ सक्रिय है, जिसे पूर्ण रूप से नष्ट करना आवश्यक हो गया है। यह तंत्र 2014 के बाद से भारत में अव्यवस्था और अराजकता उत्पन्न करने के प्रयास लगातार कर रहा है। महाकुंभ के दौरान भी सनातन विरोधी वैश्विक तंत्र ने अराजकता का माहौल बनाने का प्रयास किया, लेकिन महाकुंभ की वैश्विक सफलता ने उन्हें निरुत्साहित कर दिया। महाकुंभ को लेकर फैलाई गई भ्रांतियां, अफवाहों एवं गलत तथ्यों के प्रचार-प्रसार के सभी कुप्रयास महाकुंभ की भव्यता, दिव्यता, अलौकिकता एवं श्रद्धालुओं के उत्साह के सामने असफल हो गए और महाकुंभ एक ऐसा केंद्र बन गया, जहां विविध दृष्टिकोण एकत्र होकर विचारों के आदान-प्रदान और वैश्विक आध्यात्मिक समरसता को बढ़ावा देने वाला वातावरण बनाने में सफल रहा। ■

वर्ष प्रतिपदा ही है नववर्ष

■ प्रमोद कुमार

भारतीय संस्कृति ही नहीं अपितु सम्पूर्ण सृष्टि में नववर्ष वास्तव में वर्ष प्रतिपदा का दिन ही होता है। भारत में हिंदू सनातन संस्कृति के निमित्त नववर्ष का प्रारम्भ वर्ष प्रतिपदा के पावन दिन से आरंभ होता है क्योंकि चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की थी एवं इसी दिन से सृष्टि संवत की गणना आरम्भ हुई। वर्ष प्रतिपदा हिंदू काल गणना पर आधारित होने के साथ-साथ अनेकों वैज्ञानिक कारणों से नववर्ष है। कारण यह है कि भारतीय कैलेंडर में माह की गणना चंद्र की गति से और वर्ष की गणना सूर्य की गति पर आधारित है। काल गणना को विश्व की सबसे प्राचीन पद्धति माना जाता है।

ऐतिहासिक महत्व

वर्ष प्रतिपदा के दिन ही वसंत नवरात्रि एवं नौ दिवसीय शक्ति पर्व प्रारम्भ होता है। सनातनी हिंदू इसी दिन से शक्ति की भक्ति में लीन हो जाते हैं। सतयुग के खंडकाल में भारतीय (हिन्दू) नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन प्रारंभ हुआ था क्योंकि इसी दिन ब्रह्माजी द्वारा सृष्टि की रचना का प्रारंभ किया गया था। त्रेतायुग में वर्ष प्रतिपदा के दिन ही प्रभु श्रीराम का लंका विजय के बाद राज्याभिषेक हुआ। भगवान श्रीराम ने वानरों का विशाल सशक्त संगठन बनाकर आसुरी शक्तियों (आतंक) का विनाश किया। इस प्रकार अधर्म पर धर्म की विजय हुई और रामराज्य की स्थापना हुई।

अगले खंडकाल अर्थात द्वापर युग में युधिष्ठिर संवत का प्रारम्भ भी वर्ष प्रतिपदा के दिन हुआ। महाभारत के धर्मयुद्ध में धर्म की विजय हुई और राजसूय यज्ञ के साथ युधिष्ठिर संवत प्रारम्भ हुआ। कलयुग के खंडकाल में इसी दिन विक्रम संवत प्रारम्भ हुआ। भारतीय सनातन संस्कृति पर आधारित कालगणना को विश्व की सबसे प्राचीन पद्धति की स्वीकार्यता है। कलयुग में विक्रमादित्य द्वारा नए संवत का प्रारम्भ विदेशी आक्रमणकारियों से भारत को मुक्त कराने के महाअभियान की सफलता का प्रतीक माना गया है।

पंचांग यात्रा

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत भारत की प्रथम सरकार द्वारा राष्ट्रीय पंचांग निश्चित करने के उद्देश्य से प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. मेघनाद साहा की अध्यक्षता में एक 'कैलेंडर रिफार्म कमेटी' का गठन किया गया। 1952 में 'साइंस एंड कल्चर' पत्रिका में प्रकाशित एक लेख के अनुसार, लगभग पूरे विश्व में लागू ईसवी सन का मौलिक सम्बंध ईसाई पंथ से नहीं है और यह यूरोप के अर्धसभ्य कबीलों में ईसा मसीह के बहुत पहले से ही चल रहा था। पुरानी रोमन सभ्यता को तब तक ज्ञात भी नहीं था कि सौर वर्ष और चंद्रमास की अवधि क्या थी? दस माह का वर्ष वह तब तक चलाते रहे, जब तक उनके नेता सेनापति जूलियस सीजर ने इसमें संशोधन नहीं कर दिया। ईसा के 530 वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद, ईसाई बिशप द्वारा अपनी कल्पनाओं के आधार पर 25 दिसम्बर को ईसा का जन्म दिवस घोषित कर दिया। 1572 में तेरहवें पोप ग्रेगरी ने कैलेंडर को दस दिन आगे बढ़ाकर 5 अक्टूबर (शुक्रवार) को 15 अक्टूबर माना, जिसे ब्रिटेन द्वारा दो सौ वर्ष उपरांत अर्थात 1775 में स्वीकार किया गया। यूरोप के कैलेंडर में 28, 29, 30, 31 दिनों के माह होते हैं, जो विचित्र है क्योंकि यह न तो किसी खगोलीय गणना पर आधारित हैं और न ही किसी प्रकृति चक्र पर।

अतः इन्हीं कारणों का संज्ञान लेते हुए, 'कैलेंडर रिफार्म कमेटी' ने विक्रम संवत को राष्ट्रीय संवत बनाने की सिफ़ारिश की। विक्रम संवत, ईसा संवत से 57 साल पुराना था। परंतु, भारत में अंग्रेज़ी मानसिकता से ग्रसित लोगों को यह सुझाव पसंद नहीं आया और देश में अंग्रजी कैलेंडर को लागू कर दिया। हालांकि, विदेशी सिद्धांतों पर आधारित गणनाओं में कई विसंगतियां पाई गई हैं। ईसाई मत में ईसा मसीह का जन्म इतिहास की निर्णायक घटना मानी गई है। अतः कालक्रम को BC (Before Christ) और AD (Anno Domini) अर्थात In the year of our Lord में बांटा गया। किंतु, यह पद्धति ईसा के जन्म के बाद भी कुछ सदियों तक प्रचलन में नहीं आई थी।

आज के ईस्वी सन का मूल रोमन संवत है। यह ईसा

के जन्म के 753 वर्ष पूर्व रोम नगर की स्थापना से प्रारम्भ हुआ। तब इसमें दस माह थे (प्रथम माह मार्च से अंतिम माह दिसम्बर तक) और वर्ष 304 दिन का था। बाद में राजा नूमा पिंपोलियस ने दो माह (जनवरी एवं फरवरी) और जोड़ दिए। उसके बाद से वर्ष 12 माह अर्थात 355 दिन का हो गया। यह ग्रहों की गति से मेल नहीं खाता था, तब जूलियस सीजर ने इसे 365 और 1/4 दिन का करने का आदेश दे दिया। इसमें कुछ माह 30 दिन एवं कुछ माह 31 दिन के बनाए गए और फरवरी के लिए 28 दिन अथवा 29 दिन बनाए गए। इस प्रकार पश्चिमी कैलेंडर में गणनाएं प्रारम्भ से ही अवैज्ञानिक, असंगत, असंतुलित, विवादित एवं काल्पनिक रहीं।

इसके विपरीत सनातन हिंदू संस्कृति पर आधारित काल गणना पूर्णतः वैज्ञानिक सिद्ध पाई गई है। इस दृष्टि से वर्ष प्रतिपदा का महत्व अपने आप ही बढ़ जाता है। भारत में हिंदू सनातनियों द्वारा वर्ष प्रतिपदा का दिन ही नए वर्ष का प्रारम्भ माना जाता है एवं वर्ष भर की काल गणना भी हिंदू सनातन संस्कृति के आधार पर की जाती है, जिसे अति शुभ माना गया है।

वर्ष प्रतिपदा का महत्व

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिरदधातु॥

अर्थात, महान यशस्वी इंद्र ऐश्वर्य प्रदान करें, पूषा नामक सूर्य तेजस्विता प्रदान करें। ताक्षर्य नामक सूर्य रसायन तथा बुद्धि द्वारा रोग-शोक का निवारण करें तथा बृहस्पति नामक ग्रह सभी प्रकार के मंगल तथा कल्याण प्रदान करते हुए उत्तम सुख-समृधि से ओत-प्रोत करें। इस मंत्र में खगोल स्थित क्रान्तिवृत्त के समान चार भाग के परिधि पर समान दूरी वाले चार बिन्दुओं पर पड़ने वाले नक्षत्रों क्रमशः इंद्र, पूषा, ताक्षर्य एवं बृहस्पति अर्थात चित्रा, रेवती, श्रवण एवं पुष्य नक्षत्रों द्वारा क्रान्ति वृत्त पर 180 अंश का कोण बनता है। यह वैदिक पुरुष द्वारा की गई जनकल्याण की कामना है। इसलिए भारतीय नववर्ष ही वर्ष प्रतिपदा का दिन है, यह वैज्ञानिक रूप सिद्ध है। अतः इसे विधि पूर्वक एवं उत्साह से मनाना चाहिए एवं इसका स्वागत करते हुए,अपने वर्ष का प्रारंभ करना चाहिए।

ऋतुओं का राजा वसंत

भारतीय परंपरा में वसंत को ही ऋतुओं का राजा क्यों कहा जाता है? इस प्रश्न पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि वसंत ऋतु में न केवल प्राकृतिक सौंदर्य की चरम अभिव्यक्ति होती है, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में उल्लास, ऊर्जा और नवजीवन का संचार भी यह ऋतु करती है। वसंत ऋतु में पेड़-पौधे नए पत्तों और फूलों से भर जाते हैं, जिससे प्रकृति अपने सबसे सुंदर रूप में होती है। इस ऋतु में न अधिक ठंड होती है, न अधिक गर्मी। तापमान संतुलित और सुहावना होता है, जिससे यह सबसे सुखद मौसम माना जाता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह ऋतु शरीर के लिए अनुकूल होती है। फसलों की कटाई और उत्सवों का समय भी इसी ऋतु में होता है। वसंत पंचमी, होली, बैसाखी, उगादी, गुड़ी पड़वा आदि कई त्यौहार मनाए जाते हैं। वसंत पंचमी के दिन मां सरस्वती की पूजा होती है, जो विद्या और संगीत की देवी हैं। इसी समय चैत्र नवरात्रि की शुरुआत होती है, जो शक्ति और नवचेतना का प्रतीक है। वसंत अपनी सुखद जलवायु, प्राकृतिक सौंदर्य, कृषि, त्योहारों, आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक महत्व के कारण सभी ऋतुओं में श्रेष्ठ मानी जाती है। यही कारण है कि वर्तमान में वर्ष प्रतिपदा को ही नववर्ष के रूप में स्वीकार करने का प्रचलन बढ़ा हैं क्योंकि यही सत्य है और यही सार्थक भी है।

वर्ष प्रतिपदा की सार्थकता

भारत पुनः अपनी मूल सांस्कृतिक परंपराओं की ओर लौट रहा है। कोरोना महामारी के उपरांत सम्पूर्ण मानवता प्रकृति अनुरूप जीवन जीने की अपनी जीवन शैली की ओर मुड़ रही है। ऐसे में यूरोपीय संस्कृति के अनुरूप जनवरी में नववर्ष को प्रशासनिक कैलेंडर माना जा सकता है, किन्तु वर्ष प्रतिपदा वसंत ऋतु में होता है, जो प्रकृति में नई ऊर्जा का संचार करता है। कृषि के दृष्टिकोण से भी यह वह महत्वपूर्ण समय होता है, जब किसान नई फसल के लिए तैयार होते हैं। ऋतु अपनी पावनता और शुद्धता के शिखर पर होती है । अतः सनातनी लोग अपने वर्ष का प्रारंभ नई ऊर्जा के साथ करते हैं। पाश्चात्य नववर्ष का समय न वैज्ञानिक दृष्टि से उचित है और न ही ऋतु के अनुसार ही सहज होता है। यह जिस प्रकार की परिपाटी से मनाया जाता है, वह भी उत्कृष्ट मानवीय जीवन मूल्यों के अनुरूप नहीं है। इसीलिए सनातन भारतीय संस्कृति और मानवीय जीवन मूल्यों को बचाने के लिए वर्ष प्रतिप्रदा को ही नववर्ष के रूप में स्वीकार करना होगा, तभी हम अपने एवं सामाजिक जीवन को आलोकित कर सकेंगे। ■

(लेखक, सोशल रिफार्मस एंड रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन के अध्यक्ष हैं।)

'विविध भाषा, विविध वेश, फिर भी अपना एक देश' भाव प्रकटीकरण की माध्यम बनी सील

■ अजीत कुमार सिंह

उत्तर-पूर्व भारत और शेष भारत के बीच एकात्मता के भाव को स्थापित करने के उद्देश्य से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के प्रकल्प अंतर-राज्य छात्र जीवन दर्शन द्वारा आयोजित की जाने वाली राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा का स्नेह, प्रेम, अपनत्व और बंधुत्व की अनगिनत स्मृतियों के साथ गुवाहाटी के श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र में समापन हुआ। बीस दिवसीय यात्रा में पूर्वोत्तर के सात राज्यों के साथ ही सिक्किम के छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। यात्रा में शामिल छात्र-छात्राएं किसी होटल या धर्मशाला में रुकने के स्थान पर स्थानीय परिवारों के साथ उनके घर में रहे, जिससे उन्हें स्थानीय संस्कृति और परंपराओं का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ।

देश की एकात्मता की डोर को मजबूत करने वाली यात्रा के दौरान सभी राज्यों में इन छात्रों के स्वागत के लिए आम जनमानस ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। गत 13 फरवरी को यात्रा के समापन के बाद यात्रा में हिस्सा लेने वाले छात्र-छात्राओं ने बताया कि यह यात्रा उनके मानस में जीवन भर के लिए अंकित हो गई है और आजीवन इस यात्रा से प्रेरणा मिलती रहेगी। विभिन्न स्थानों पर जाकर उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि सांस्कृतिक विविधता भारत की सबसे बड़ी पूंजी है।

राष्ट्रीय एकात्मता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एकात्मता यात्रा का आयोजन आरम्भ गत 22 जनवरी से हुआ। यात्रा में पूर्वोत्तर के सात प्रांतों एवं सिक्किम सहित आठ राज्यों के 64 जिलों के 230 छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया, जिनमें पूर्वोत्तर की 68 अलग-अलग जनजाति वर्ग के छात्र-छात्राएं सम्मलित थे। बीस दिवसीय राष्ट्रीय यात्रा के समापन समारोह में असम सरकार के मंत्री पीयूष हजारिका, अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान, क्षेत्रीय संगठन मंत्री कमल नयन, गुवाहाटी विश्वविद्यालय के कुलगुरु डा. ननी गोपाल महंत, अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री कमलेश सिंह सहित कई विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे। समारोह में मंत्री पीयूष हजारिका ने यात्रा में शामिल छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह यात्रा देश को और गहराई से समझने में सहायक होगी। कुलगुरु डा. ननी गोपाल महंत ने भारत की परंपराओं और संस्कृति

किसी ने पहली बार रेलगाड़ी से यात्रा की तो कईयों ने पहली बार देखा समुद्री तट

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) के युग में एकात्म यात्रा में कई छात्र-छात्राएं ऐसे भी रहे, जिन्होंने कभी रेलगाड़ी की यात्रा नहीं की। यह जानकार आश्चर्य तो होगा, लेकिन यह सच है। अभाविप प्रकल्प सील के तहत राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा-2025 में हिस्सा लेने वाले कई छात्र ऐसे थे, जिन्होंने अपने जीवन में पहली बार रेलगाड़ी से यात्रा की। अधिकांश का कहना था कि सील यात्रा के पहले वह कभी रेलगाड़ी पर नहीं बैठे और इससे पहले महासागर को दीवारों पर लगे कैलेंडर एवं टेलीविजन पर ही देखा था। ऐसे छात्रों ने सील के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इसके माध्यम से उन्हें प्रत्यक्ष रूप से महासागर की लहरों को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन

'विविध भाषा, विविध वेश, फिर भी अपना एक देश' भाव के व्यावहारिक प्रकटीकरण का माध्यम बनी एकात्म यात्रा 1962 में चीन एवं 1965 में पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध की पृष्ठभूमि में आरंभ हुई थी। राष्ट्रीय एकात्मता को स्थापित करने के उद्देश्य से अभाविप ने अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन (Student's Experience in Inter-state Living) जिसे सील भी कहते हैं, प्रकल्प की शुरूआत की। 'सील' राष्ट्रीय एकात्मता के लिए कार्य करने की कड़ी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसके माध्यम से अभाविप पूरे देश को पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति एवं प्राकृतिक सुंदरता से परिचित कराने का काम दशकों से करती आ रही है। 1966 से आरम्भ हुई यात्रा बिना किसी ठहराव (कोरोना काल को छोड़कर) के जारी है। सील यात्रा से जुड़े अनेक विद्यार्थी आज न केवल समाज जीवन में पूर्वोत्तर भारत की प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं, बल्कि वह भारत माता का मस्तक भी गर्व से ऊंचा कर रहे हैं। प्रतिवर्ष पूर्वोत्तर के छात्रों की अखिल भारतीय स्तरीय एकात्मता यात्रा का आयोजन अलग-अलग स्थानों पर किया जाता है, जहां प्रतिभागी विभिन्न परिवारों के निवासों में रुकते हैं, जिससे उन्हें परिवार के सदस्यों के साथ उनके पारिवारिक परिवेश में रहने का अवसर मिलता है। साथ ही वहां की रीति-नीति, सांस्कृतिक, भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों से जुड़ी जानकारी प्राप्त होती है। यात्रा के दौरान वह न केवल एकात्मता के बंधन में बंध जाते हैं, बल्कि उस परिवार के साथ उनका नियमित आत्मीय संपर्क भी बन जाता है। इसी प्रकार शेष भारत से भी प्रतिभागी पूर्वोत्तर जाकर वहां की संस्कृति, प्राकृतिक संसाधनों, परिस्थितियों, संभावनाओं एवं समस्याओं का अध्ययन करते हैं और वहां से वापस आने के बाद पूर्वोत्तर भारत के बारे में लोगों को बताते है।

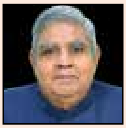

अभाविप द्वारा आयोजित राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा एक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि यह उन लोगों के प्रति हमारी श्रद्धांजलि है, जिन्होंने स्वतंत्रता दिलाने के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। यह संविधान के निर्माताओं को श्रद्धांजलि है, जिनसे यह राष्ट्र अस्तित्व में आया। यह सरदार पटेल को श्रद्धांजलि है कि वह रियासतों का एकीकरण कर सके और इससे यह एक बात सीखने को मिलती है कि चाहे कितनी भी चुनौतियां क्यों न हों, राष्ट्र को सर्वोपरि सदैव रखेंगे। पूर्वोत्तर के सांस्कृतिक योगदान के कारण ही दुनिया में भारत का एक अद्वितीय महत्व है। सील यात्रा को अब अंकगणितीय नहीं, बल्कि ज्यामितीय दृष्टि से विस्तार करना चाहिए।

जगदीप धनखड़ (उपराष्ट्रपति)

अभाविप का 'सील' प्रकल्प भारत की 'एकता में विविधता' का एक सशक्त उदाहरण है। विद्यार्थी जीवन में इस तरह की जागरूकता और संवेदनशीलता ही पूर्वोत्तर के विकास के लिए प्रेरित करती है। जिस प्रकार यह यात्रा पूरे देश में दिलों को जोड़ने का कार्य कर रही है, उसी तरह सरकार भी पूर्वोत्तर को राष्ट्रीय मुख्यधारा से जोड़ने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। युवा शक्ति राष्ट्र निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ है। ऐसे आयोजनों से राष्ट्रभक्ति की भावना मजबूत होती है।

नितिन गडकरी (केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री)

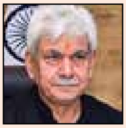

अभाविप की इस पहल से युवा विविधता में एकता के वास्तविक अर्थों को समझने और उसे जीने में सक्षम हो रहे हैं। 1966 में शुरू किए गए अंतरराज्यीय छात्र जीवन दर्शन कार्यक्रम ने पूर्वोत्तर क्षेत्र और देश के बाकी हिस्सों के युवाओं के बीच एक भावनात्मक पुल बनाया है।

मनोज सिन्हा (उपराज्यपाल, जम्मू-कश्मीर)

का उल्लेख करते हुए कहा कि यात्रा के माध्यम से छात्रों को देश की समृद्ध विरासत को समझने का अवसर मिला।

अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा के महत्व और प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए 'विविध भाषा, विविध वेश, फिर भी अपना एक देश' के नारे की महत्ता पर जोर दिया। उन्होंने

बताया कि यात्रा के लिए उद्घाटन कार्यक्रम का आयोजन गुवाहाटी के काहिकुची स्थित राज्य पंचायत और ग्रामीण विकास संस्थान में किया गया, जिसमें भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) गुवाहाटी के निदेशक प्रा. देवेंद्र जलिहाल, अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री गोविंद नायक समेत अन्य अभाविप पदाधिकारी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। इस दौरान आईआईटी गुवाहाटी के निदेशक प्रा. जलिहाल ने छात्रों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यात्रा देश की विविधता को समझने का सुनहरा अवसर प्रदान करेगी। सील प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए अभाविप राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री गोविंद नायक ने कहा कि पूर्वोत्तर के अलग-अलग राज्यों के अलग-अलग जनजातियों के यह विद्यार्थी देशभर में पूर्वोत्तर भारत के ब्रांड एंबेसडर बनेंगे।

मणिपुर प्रांत संगठन मंत्री एवं राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा-2025 के संयोजक भगवत सिंह ने बताया कि अबकी बार यात्रा में भाग लेने वाले 230 विद्यार्थियों को आठ अलग-अलग समूहों में बांटा गया। सभी समूहों के नाम पूर्वोत्तर के महापुरुषों एवं गुमनाम क्रांतिकारियों यथा-लाचित बरफूकन, यू. तिरोत सिंह, मोजी रीबा, रानी मां गाइदिन्ल्यू, वीर टिकेन्द्रजीत सिंह, शांति घोष, रानी रोपुइलियानी एवं हेलेन लेपचा के नाम पर रखे गए, ताकि देश के लोगों को पूर्व के सेनानियों के विषय में जानकारी मिल सके। प्रत्येक समूह ने अलग-अलग राज्यों के विभिन्न स्थानों पर बीस दिवसीय यात्रा की। यात्रा के दौरान सील प्रतिभागियों के सम्मानार्थ 32 स्थानों क्रमशः भुवनेश्वर, नंदुरबार, पटना, वाराणसी, गोरखपुर, लखनऊ, कानपुर, जैसलमेर, एल्लेपी, अहमदनगर, चंडीगढ़, स्मृतिवन भूकंप संग्रहालय (भुज), जयपुर, आगरा, दिल्ली, भोपाल, तिरुपति, बिलासपुर, भाग्यनगर (हैदराबाद), बागलकोट, रोहतक, शिमला, जम्मू, चंद्रपुर, मैसूर, मुंबई, कोयंबतूर, अजमेर, रांची, मेरठ एवं देहरादून में अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। अभिनंदन समारोह के समय प्रत्येक स्थान पर सैकड़ों की संख्या में अभाविप कार्यकर्ता ढोल-नगाड़े, बाजे-गाजे के साथ पूर्वोत्तर के मित्रों का स्वागत करने के लिए उपस्थित रहे। यात्रा में सभी प्रतिनिधियों को स्थानीय परिवारों के निवास में ठहराया गया, जिससे उन्हें भारत की अनूठी परिवार व्यवस्था को समझने का अवसर मिला। यात्रा के दौरान पूर्वोत्तर के प्रतिनिधियों ने लगभग 460 परिवारों के घरों में निवास किया।

सील प्रतिनिधियों ने अलग-अलग राज्यों के ऐतिहासिक स्थलों, राष्ट्रीय महत्व के शिक्षण संस्थानों, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी (एनआईटी), केंद्रीय विश्विद्यालय जैसे महत्वपूर्ण शिक्षण संस्थानों, संसद, विधानसभा, राजभवन, औद्योगिक इकाई, समुद्री तट एवं पहाड़ी क्षेत्रों का भ्रमण किया। साथ ही उन्हें उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ से लेकर विभिन्न राज्यों के राज्यपाल, मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री, कुलपति, केंद्रीय संस्थानों के निदेशकों के साथ संवाद करने का अवसर मिला। सभी स्थानों पर सील प्रतिनिधियों के स्वागत एवं सम्मान हेतु नागरिक अभिनंदन कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। ■

यह हर्ष का विषय है कि अंतरराज्य छात्र जीवन दर्शन 1966 से राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ कर रहा है और यह संगठन सीमावर्ती एवं सुदूर क्षेत्रों के छात्रों को भारत के अन्य भागों के लोगों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। 'एक राष्ट्र-एक जन-एक संस्कृति' केवल एक नारा नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक और भावनात्मक एकता का वास्तविक प्रतिबिंब है।

संतोष गंगवार (राज्यपाल, झारखंड)

पूर्वोत्तर सिर्फ भारत का हिस्सा ही नहीं है, बल्कि यह भारत का हृदय है। यह सुनिश्चित करना सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है कि इसमें हर नागरिक हिस्सा लेकर स्वयं को मूल्यवान महसूस करे। 1966 में अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन के तहत की गई पहल ने छात्रों को राष्ट्र की विविधता का प्रत्यक्ष अनुभव करने का अवसर देकर विभिन्न क्षेत्रों के बीच पुल का निर्माण किया है।

एच.डी. कुमार स्वामी (केंद्रीय भारी उद्योग एवं इस्पात मंत्री)

वैश्विक बौद्धिक चर्चाओं को आकार दे रहा है भारतीय जीवन दर्शन

■ प्रा. मिलिंद मराठे

हजारों वर्षों से भारतीय संस्कृति विकसित होती आई है। उस कालखंड में अनेक दार्शनिक, संत, ऋषि, विवेकशील राजाओं द्वारा हुई तात्विक चर्चा, वाद-संवाद, व्याख्यान, विचार-विमर्श से उत्पन्न समग्र चिंतन को भारतीय तत्व ज्ञान या दर्शन कहा गया है। यह चिंतन सर्व-समावेशक, सार्वकालिक, एकात्म, उदार है। मैं कौन हूं? और विश्व के उत्पत्ति के संबंध में, ज्ञान के संबंध में, जीवन की आदर्श व्यवस्था और जीवन के उद्देश्य के संबंध में, कर्म सिद्धांत के बारे में, साध्य-साधन-विवेक के बारे में, जीव-जगत और जगदीश्वर के संबंधों के बारे में यह चिंतन टिप्पणी करता है, जो मूलभूत विचारों से परिपूर्ण है। नैतिकता का आधार, शास्त्रीय तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अंतरात्मा से निकली आवाज को मानना, यह भारतीय तत्व ज्ञान की विशेषता हैं। इसीलिए यह सनातन भारतीय दर्शन विश्व में आज चर्चित हैं और उसके विचारों को भी आकार दे रहा हैं।

स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में आयोजित विश्व धर्मसंसद में 11 सितंबर 1893 में अपना ऐतिहासिक भाषण देते हुए उद्घोषित किया कि मैं उस प्राचीन धर्म से हूं, जिसने दुनिया को सिर्फ सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ ही नहीं पढ़ाया, बल्कि सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करता है। इसके बाद समूचा विश्व भारतीय सनातन धर्म का दर्शन सुनने लगा, जानने लगा, मानने भी लगा।

मैं कौन हूं और मेरा इस विश्व से क्या रिश्ता है?

जीवन दर्शन का यह अत्यंत महत्व का प्रश्न है। भारत छोड़कर विश्व में इसके बारे में कई बातें कही गई हैं। मनुष्य 'प्राणी' है। वह आर्थिक प्राणी है। 'Homo Economicus'है। इच्छा, आकांक्षाओं का पुलिंदा है। वह सामाजिक प्राणी जरूर है, लेकिन व्यक्तिगत उपयोगिता और संतुष्टि उसके लिए सर्वोपरि है। इसके लिए संघर्ष करना, स्वयं किसी भी कीमत पर जीतना, दूसरों को हराना जरूरी है। Struggle for existence and survival of the fittest is the only मंत्र। इस दृष्टिकोण से मनुष्य में स्वार्थ, लोभ, अनिर्बंध भोग की इच्छा, अनिर्बंध व्यक्ति स्वातंत्र्य जो स्वेच्छाचार में बदल जाता है, यह विकृतियां उत्पन्न होती हैं। इससे प्रत्येक विषय में टकराव की भूमिका बनती है। Conflict between matter and mind, strong and weak, science and spiritualism, haves and have nots, man and nature यह भाव उत्पन्न होते हैं। फिर कोई 'गॉड' मनुष्य को कहता है कि मैंने यह सुंदर विश्व आपके उपभोग और मजे के लिए बनाया हैं। इससे ही विकास के प्रतिमान बनते हैं।

अधिक उपभोग, अधिक प्रगतिशील समाज-पूरा विश्व इन गलत धारणाओं पर चला लेकिन आज उसकी खामियां, त्रुटियां, गलतियां एवं अधूरापन ध्यान में आ रहा है और विश्व एक बेहतर मार्ग ढूंढने की प्रक्रिया में आ गया है। यहीं पर भारतीय दर्शन का विचार आज विश्व के बौद्धिक चर्चा को दिशा दे रहा है। भारत का तत्व ज्ञान कहता है कि मैं शरीर, मन, बुद्धि नही हूं। मैं अस्तित्व की चेतना हूं। आत्मतत्व हूं। मैं स्वयं ईश्वर का अंश हूं। आनंद, सत्य, शिव और सुंदर हूं। मैं अगर ठीक काम करूं तो नर का नारायण बन सकता हूं। एक ही तत्व सभी में विद्यमान है। मैं और विश्व अलग नहीं, एक ही है। Oneness manifests in seemingly diverse things, एक ही अनेक हो गया। लेकिन वह अनेक एक-दूसरे के साथ दृढ़ता से जुड़े हैं, एक दूसरे पर निर्भर हैं। व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि और परमेष्ठि सब जुड़े हैं। कही पर भी द्वैत, दुजाभाव नही है। अद्वैत ही है।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।।

अर्थात जो कुछ भी इस जगत में है, वह सब ईश्वर का है। तुम उसके त्याग के द्वारा उससे भोग लो। किसी का धन मत लूटो ।

लालच नहीं, तो शोषण नहीं। इससे सद्भाव, प्रेम, सभी की चिंता करना, परस्पर सहयोग की भावना दृढ़ होती है। आज पूरा विश्व इस भारतीय दर्शन पर सहमत हो रहा हैं। चर्चा एवं विचार कर रहा है। स्वयं की खोज में हजारों विदेशी स्त्री-पुरुष भारत के आश्रमों में आकर गुरुओं के मार्गदर्शन में उस एकत्व के, आनंद की अनुभूति ले रहे हैं। विविध देशों के स्तर पर साहचर्य, सब साथ चलना, एक-दूसरे की मदद करना, युद्ध नहीं शांति, जियो और जीने दो जैसी कई बातें विश्व समुदाय कर रहा है जो कि भारतीय दर्शन से उत्पन्न हुई हैं। G-20 बैठक में Peace building and Reconcilation-ushering in an era of No War यह विषय जो आया, वह भारतीय जीवन दर्शन से विश्व की वैचारिक बहस कैसे आकार ले रही है? इसका ही द्योतक है।

जीवन का उद्देश्य क्या है?

सामान्यतः व्यक्तिगत व्यावसायिक प्रगति का लक्ष्य ही जीवन का लक्ष्य माना जाता है। केवल मैं, मेरी पत्नी, मेरा परिवार, मेरा व्यवसाय, मेरी प्रगति-यही सोचना होता है। वास्तव में व्यक्तिगत लक्ष्य के साथ वैश्विक लक्ष्य को भी अपने जीवन का उद्देश्य बनाना चाहिए। केवल यशस्वी नहीं, बल्कि सार्थक जीवन होना चाहिए। आपने निःस्वार्थ रूप से दूसरों के लिए क्या किया? यह महत्वपूर्ण है। यह बात अब विश्व के समुदायों को ध्यान में आ रही है। 'जो जितना भोगे-वह उतना छोटा और जो जितना त्यागे-वह उतना बड़ा' यह भाव उत्पन्न हो रहा है। परोपकारी गतिविधियों से समाज की सेवा करना, प्रत्येक छात्र द्वारा गैर सरकारी संगठन में काम करना, प्रत्येक कंपनी ने निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) मानकर अपने कमाए हुए लाभ का कुछ हिस्सा समाज को देना, इत्यादि सभी बातें भारतीय दर्शन से उपजी हुई दिखती हैं।

विविधताओं का उत्सव मनाना और सह-अस्तित्व

विश्व ने कई प्रकार के अब्राहमिक संप्रदायों का अनुभव लिया है। वह केवल एक देव (वह भी पुरुष), एक पुस्तक को मानते हैं। उनके दूत होते हैं (जीसस या मोहम्मद) और उनका शब्द अंतिम होता है, जो सभी को मानना ही है। नहीं माना, तो मृत्युदंड है। जो अन्य मत मानने वाले हैं। उनको साथ रहने का अधिकार नहीं या तो उनका मत परिवर्तन करो या उन्हें समाप्त करो। इसलिए बलपूर्वक धर्म परिवर्तन उनकी पद्धति है। ईश्वर की ऐसी परिभाषा और अज्ञानता का उत्पाद और कही भी नहीं है।

इसके विपरीत भारतीय दर्शन सह अस्तित्व को अनन्य महत्व देता हैं।

माता भूमिः पुत्रोहं पृथिव्याः पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु॥

अर्थात यह भूमि हमारी माता है और हम सब इस पृथ्वी के पुत्र हैं। 'पर्जन्य' अर्थात मेघ हमारे पिता हैं। और यह दोनों मिल कर हमारा 'पिपर्तु' अर्थात पालन करते हैं।

हम पृथ्वी के पुत्र हैं। इसलिए विश्व के सभी जन मेरे सगे भाई और बहन है। उनमें खानपान, वेशभूषा, रीति-नीति, पद्धति, रंग इसमें भेद हो सकते हैं, लेकिन यह सभी मेरे अपने हैं। मैं उन सभी की विविधता का उत्सव मना सकता हूं और सह अस्तित्व कर सकता हूं। 'एकम् सत् विप्रा बहुधा वदन्ति' इस पर भारतीय तत्व ज्ञान का अटूट विश्वास है अर्थात सत्य एक है लेकिन ज्ञानी व्यक्ति उसे अलग-अलग शब्दों से समझाते हैं। इसलिए इस विश्व में असंख्य मत है और वह सभी सत्य हैं। मानो विश्व हम सबका एक घर है। इसकी अनुभूति कोरोना के समय पूरे विश्व को हो गई। जब कुछ देशों को वैक्सीन की आवश्यकता थी तो अमेरिका ने वैक्सीन देने से मना किया। लेकिन भारत ने वैक्सीन के भंडार खोल दिए और अस्सी से अधिक देशों में सामान्य कीमत पर वैक्सीन का वितरण किया। 'सभी मेरे अपने' यह भाव अपने जीवन दर्शन से भारतीय ही जानता है। धीरे-धीरे पूरा विश्व इसी दिशा में विचार कर रहा है।

मातृ संकल्पना-परिवार संकल्पना

भारतीय जीवन दर्शन का एक अनुपमेय तत्व है परिवार संकल्पना। सभी को माता का स्वरूप देना। भू-माता, गो माता, नदी माता-इससे जो मेरे लिए मददगार हैं, उन सभी के प्रति कृतज्ञता रखनी चाहिए, यह भाव आता है। समाज की मूलभूत इकाई व्यक्ति नहीं, परिवार है। परिवार में सभी की चिंता, न्यायपूर्ण व्यवहार, आत्मीयता, प्रेम है और

एक-दूसरे का भला हो, विकास हो, यह भाव है। परिवार से उत्तम संस्कार अगली पीढ़ी को मिलते हैं। दान, अतिथि सत्कार, प्रामाणिकता से धन अर्जित करना, अतिथि सेवा, समाज के सभी घटकों को संभालना, व्यक्ति के परिपूर्ण विकास की आश्रम व्यवस्था ठीक से समझाना। यह सभी कार्य परिवार से होते हैं। पश्चिमी देशों में परिवार के टूटने की समस्याएं वह अनुभव कर रहे हैं। एकल अभिभावक अपने संतति को ठीक से विकसित नहीं कर सकते, यह उनको समझ में आने लगा है। अतः इंग्लैंड की एक विदुषी ने उनके देश का चुनाव इसी मुद्दे पर लड़ा कि मैं यहां भारत जैसी परिवार व्यवस्था प्रस्थापित करने का प्रयास करूंगी। यही कारण है कि आज विदेशों के उद्योगों में भी मालिक-मजदूर अलग नहीं, एक परिवार के घटक है। G-20 में भारत का विषय ही One Earth, One Family, One Future रहा, जिसे सभी देशों का समर्थन मिला ।

स्वास्थ्य

आयुर्वेद और योग, यह मात्र भारतीय स्वास्थ्य चिकित्सा के मुख्य बिंदु ही नहीं हैं, बल्कि वैज्ञानिक जीवन पद्धति है। आहार, निद्रा, अच्छे विचार, दिनचर्या, ऋतुचर्या, यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि-ऐसे आदर्श स्वस्थ भारतीय जीवन पद्धति के मानक है। समूचा विश्व आज उसे अपना रहा हैं। 192 देश, जिसमें 44 इस्लामिक देश हैं, हर वर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मना रहे हैं। उनकी यह धारणा है कि The practice of Yoga brings joy, health, peace from within and deepens a sense of connection between an individual's inner consciousness and the external world.

मन और मन का प्रभाव

Cartesianism से Platonism तक के पाश्चिमात्य तत्व ज्ञान में मन को जानने का प्रयास है। मन के प्रभाव को समझने का प्रयास है। सिगमंड फ्राइड ने भी इस क्षेत्र में काम किया है। लेकिन प्राचीन भारतीय तत्व ज्ञान में मन के बारे में जो कहा गया, आज उसकी चर्चा विश्व में की जा रही है। जैसा हम सोचेंगे-वैसे ही हम बनेंगे। हमारे विचारों में इतनी शक्ति होती है। यह बात आज का आधुनिक शास्त्र कह रहा है। लेकिन अष्टावक्र गीता में यह बात हजारों वर्ष पहले बड़े स्पष्ट शब्दों में कही गई थी कि

"मुक्ताभिमानी मुक्तो हि, बद्धो बद्धाभिमान्यपि ।
किवदन्तीह सत्येयं या मतिः सा गतिर्भवेत् ॥"

अर्थात स्वयं को मुक्त मानने वाला मुक्त ही है और बद्ध मानने वाला अवश्य बंधा हुआ ही है। यह सत्य ही है कि जैसी सोच होती है, वैसी ही गति होती है। Thinking makes it so. यह आज कहा गया है और उसके प्रमाण भी हैं।

कर्म सिद्धांत और पुनर्जन्म

व्यक्ति अच्छे और बुरे जो भी कर्म करता है, उसके अनुरूप भविष्य में उसे सुख अथवा दुःख की प्राप्ति होती है। जीवन की संपूर्ण यात्रा में हम किसी पुराने लेन-देन को चुका रहे होते हैं अथवा कोई नया लेन-देन बना रहे होते हैं। यह लेन-देन यदि इस जन्म में पूरा नहीं हुआ, तो उसे दूसरे जन्म में पूरा करना पडता है। इसी को कर्म सिद्धांत एवं पुनर्जन्म दर्शन कहते हैं।

चार्वाक के अतिरिक्त अन्य सभी भारतीय दर्शन कर्मवाद का एक स्वर से प्रतिपादन करते हैं और इसको जीवन के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण मानते हैं।

यह दर्शन मनुष्य को नैतिकता की ओर ले जाता है। यह दर्शन विश्व भर के बौद्धिक चर्चाओं में हमेशा बना रहा। कई पाश्चात्य दार्शनिकों ने इसे माना है। लेकिन इस्लाम और ईसाई पंथों ने नकारा भी है। भारतीय जीवन दर्शन पर पूरे विश्व में बहस हो रही है और भारतीय जीवन दर्शन विश्व के बौद्धिक चर्चाओं को आकार दे रहा है। 'वादे वादे जायते तत्वबोधः'। भारत का यह दृढ़ विश्वास है कि निरंतर सुसंवाद से तथा अनेक प्रकार के विचार मंथन से तत्व, अच्छी बातें, शुभ साक्षात्कार होता है। इसी कारण भारतीय संस्कृति विविधता का सम्मान करती है। ऐसे ही विचार मंथन से सम्पूर्ण मानव जाति के लिए कल्याणकारी, भारतीय जीवन दर्शन पर आधारित, एक मानव धर्म, विश्व धर्म सुस्थापित होगा। इससे प्रत्येक व्यक्ति सुखी होगा। मानव जाति की एकता होगी। प्राणियों में सद्भावना और विश्वकल्याण होगा। एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य-यह भविष्य में भारत के तीन आदर्श वाक्य सिद्ध होंगे। ■

(लेखक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष हैं।)

National Students Film Festival-2025

A Grand Celebration of Young Filmmakers

The National Students' Film Festival (NSFF) Mumbai 2025 concluded successfully on February 23, 2025, at Welingkar Institute, Matunga, bringing together the best of young filmmaking talent from across 46 campuses in India. The two-day festival was a remarkable showcase of 41 short films, highlighting India's linguistic and cultural diversity, with films presented in eight languages and three tribal dialects. NSFF 2025 celebrated the creativity and storytelling skills of student filmmakers, with 11 outstanding films receiving awards in various categories. The festival provided a valuable platform for aspiring filmmakers to present their work, interact with industry experts, and gain insights into the art of filmmaking. The prestigious Best Film award was won by Karpi, which was also declared the Winner of NSFF 2025. Other notable winners included Best Editing for Second Chance, Best Cinematography for Dhruv Tara, Best Music for Malarin Khoda, Best Screenplay for Dumpyard, Best Production for Cocoon and Best Actor, which was shared by performances from Luna and Matbhed. In recognition of films with a social impact, the festival presented special awards, including the Yashwantrao Khelkar Award to Delivery Boy, Ahilyabai Holkar Award to InVisible, Special Mentions for Lagav and Placement Alert and Most Inspirational Films for Luna: Old Man Luna and Missing. To support emerging filmmakers, the Best Film winner, Karpi, received a cash prize of ₹1 Lakh along with a trophy, while other category winners were awarded ₹10,000 each, recognizing their excellence and motivating them to continue their creative journey. The festival was inaugurated by distinguished personalities from the film industry and academia, including Chief Guest Om Raut, Renowned Filmmaker; Guest of Honour Virendra Singh Solanki, National General Secretary, ABVP and Special Guests Uday Salunkhe, Director, Welingkar Institute and Tarun Rathu, Vice President, UP Film City & Secretary, NSFF Reception Committee. Their inspiring speeches and

words of encouragement set an enthusiastic tone for the festival, motivating students to explore their passion for cinema. NSFF 2025 also featured exclusive masterclasses and discussions with industry experts, offering valuable insights into various aspects of filmmaking. The sessions included Cultural Context in Cinema by Satyajeet Mandle, Decoding Movies by Milind Lele, Direction Masterclass by Tejas Deoskar and Production & Post-Production by Mushtaq Nadiadwala.

Additionally, an expert talk on "Career in Cinema through Bharatiya Vision" featured Keynote Speaker Manoj Joshi, with panelists Aditya Jamde & Ashu Trikha, moderated by Dhruv Kandpal. These sessions provided students with practical knowledge and an understanding of the evolving film industry, helping them refine their craft. The festival concluded with a grand Valedictory & Award Ceremony, graced by Chief Guest Anil Sharma, Acclaimed Filmmaker and Guest of Honour Devdatta Joshi, whose presence added prestige to the event, making it a memorable experience for all attendees.

The National Students' Film Festival Mumbai 2025 was a landmark celebration of young talent, providing a dynamic space for students to showcase their creativity, learn from experts, and connect with industry leaders. By honoring excellence in filmmaking across diverse languages and cultures, the festival played a crucial role in inspiring the next generation of Indian storytellers. With its resounding success, NSFF 2025 has set the stage for future editions, continuing its mission to nurture and celebrate student cinema in India. ■

(Rashtriya Chhatrashakti Team)

| बदलाव |

दसवीं की परीक्षा दो बार कराने के लिए सीबीएसई का प्रारूप घोषित

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने देश भर में कक्षा-10 की परीक्षा को दो बार कराने के लिए अपनाई जाने वाली नीतियों के विषय में अपना प्रारूप जारी कर दिया है। बोर्ड ने अपने प्रारूप पर सुझाव आमंत्रित किए हैं और सुझावों के आधार पर नई नीतियों में आवश्यक परिवर्तन करके अंतिम रूप से नीति को जारी किया जाएगा। सीबीएसई के अनुसार 10वीं परीक्षा का पहला चरण 17 फरवरी से आरम्भ होकर 6 मार्च 2026 तक चलेगा। इसी तरह दूसरे चरण की परीक्षा 5 मई से 20 मई 2026 तक होगी। दसवीं बोर्ड परीक्षा के दोनों चरण केवल 34 दिनों में पूरे किए जाएंगे।

बोर्ड ने स्पष्ट किया है कि दसवीं परीक्षा में छात्र लिखित परीक्षा दो बार दे सकेंगे, लेकिन प्रायोगिक एवं आंतरिक मूल्यांकन एक ही बार होगा। अलग-अलग विषयों में होने वाली प्रायोगिक एवं आंतरिक मूल्यांकन में मिले अंकों को लिखित परीक्षा के अंकों में जोड़कर परिणाम घोषित किए जाएंगे। बोर्ड के अनुसार प्रथम चरण की परीक्षा के बाद कोई परिणाम पत्र जारी नहीं किया जाएगा। पहली परीक्षा में छात्र के उत्तीर्ण होने सम्बन्धी तथ्य डिजिलॉकर में उपलब्ध रहेंगे, जिसका उपयोग 11वीं में प्रवेश के लिए किया जा सकेगा। अगर छात्र दूसरे चरण की परीक्षा नहीं देना चाहेगा, तो वह डिजिलॉकर में उपलब्ध अंकों के आधार पर आगे प्रवेश ले सकेगा। दूसरे चरण की परीक्षा के बाद अंतिम परिणाणों की घोषणा के साथ ही परीक्षा उत्तीर्ण करने सम्बन्धी प्रमाणपत्र जारी किया जाएगा।

बोर्ड के अनुसार किसी भी स्थिति में अब विशेष परीक्षा (कंपार्टमेंट परीक्षा) नहीं होगी। अभी तक व्यवस्था यह है कि अगर कोई छात्र पहली परीक्षा में सफल नहीं होता है या कुछ विषयों में असफल हो जाता है, तो उसे जुलाई माह में विशेष परीक्षा देने का अवसर मिल जाता है। लेकिन अगले वर्ष से मई में होने वाली दूसरी परीक्षा में छात्र को बैठने का विकल्प दिया जाएगा और विशेष परीक्षा को समाप्त कर दिया जाएगा। बोर्ड की नई नीतियों के अनुसार छात्र ने जिन विषयों में पहली परीक्षा दी होगी, दूसरे चरण में भी उन्हीं विषयों की परीक्षा देने का विकल्प मौजूद रहेगा। दूसरे चरण की परीक्षा के दौरान विषयों में परिवर्तन नहीं किया जा सकेगा। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

स्वामी विवेकानंद और पंच परिवर्तन

■ अश्विनी शर्मा

स्वामी विवेकानंद का नाम सुनते ही एक वाक्य चित्त में त्वरित आता है- 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' अर्थात उठो, जागो और अपने लक्ष्य को प्राप्त करो'। वैसे तो यह वाक्य कठोपनिषद में है, परंतु यह मंत्र युवा संन्यासी विवेकानंद ने निर्भीकता और स्पष्टता से विश्व के समक्ष रखा। स्वामी विवेकानंद पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने पश्चिम में भारतीय सनातन संस्कृति, वेदान्त दर्शन और योग को केवल प्रस्तुत ही नहीं, अपितु प्रतिष्ठित भी किया। धर्म संसद के पहले ही भाषण से वह विश्व विख्यात हो गए। अमेरिकावासी बहनों और भाइयों... उनके केवल इतना कहते ही सभी लोग खड़े हो गए और पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। यह घोर करतल नाद उस संन्यासी के सम्मान में हुआ, जिसे कुछ क्षण पूर्व हीन भावना से देखा जा रहा था। कुल 17 दिन (11 से 27 सितंबर 1893) तक आयोजित विश्व धर्म संसद में स्वामी विवेकानंद ने छह व्याख्यान दिए। अमेरिका के विभिन्न प्रान्तों में उनके बड़े-बड़े पोस्टर लगे, दुनिया भर के समाचार पत्र उनकी प्रशंसा और वंदन से भर गए। विश्व में भारत को जानने के लिए जिज्ञासा रखने वालों के लिए वह एक आशा की किरण तो थे ही। साथ ही साथ उनकी विश्व विजय ने भारत के स्वाधीनता आंदोलन में भी उत्साह भर दिया।

2025 में स्वामी विवेकानंद की 162वां जन्मोत्सव विश्व भर में मनाया गया। भारत आने वाले दशकों तक विश्व की सर्वाधिक युवा जनसंख्या वाला देश होगा और भारत का अमृत काल भारत के आगे बढ़ने के अनेकों संकेत दे रहा है। ऐसे स्वर्णिम काल में विवेकानंद और अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं क्योंकि विवेकानंद ने कहा था कि मुझे सौ विश्वासी युवा दो। मैं भारत को पूरी दुनिया में प्रथम राष्ट्र बना दूंगा। आज युवा हैं, पर वह नहीं है, परंतु हमारे साथ हैं। भारत को वैसा बनाना पड़ेगा, जैसा स्वामी विवेकानंद चाहते थे। ऐसे अनेकों मार्ग में से एक मार्ग विश्व के सबसे बड़े सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने समाज को पंच परिवर्तन का बताया है। यह परिवर्तन हैं- सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, स्व का भाव, नागरिक कर्तव्यों का पालन और पर्यावरण संरक्षण।

स्वामी विवेकानंद और समरसता

स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि नारायण तक पहुंचने के लिए दरिद्र नारायण की सेवा करनी चाहिए। उनकी मान्यता थी कि भारतीय जीवन दर्शन दुनिया में सर्वश्रेष्ठ है। इसके उपरांत भी सामाजिक विषमता की खाई देखकर गहन वेदना होती है। उन्होंने अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा था कि मैं आप को पुनः स्मरण दिलाता हूं कि प्रत्यक्ष कार्य की महती आवश्यकता है और उस कार्य का पहला चरण है, हमें भारत के लाखों वंचित लोगों के पास जाना होगा, हाथ देकर उन्हें उठाना होगा। अस्पृश्यता एक प्रकार की मानसिक व्याधि हैं, उससे सावधान रहना होगा। उनके भाषणों और लेखों में यही भाव झलकता था कि सेवा का कोई गुप्त उद्देश्य नहीं होना चाहिए, सेवा कोई वाणिज्य कर्म नहीं है कि तुम कुछ प्राप्त करने के लिए अपने धर्म को अपनी सेवाएं दे रहे हो। उन्होंने लिखा कि मत भूलो कि राष्ट्र झोपड़ियों में निवास करता है। राष्ट्र का प्रारब्ध अधिकांश लोगों की स्थिति पर निर्भर करता है। क्या तुम उन्हें ऊपर उठा सकते हो? उनकी जन्मजात धार्मिक पहचान को बनाए रखते हुए क्या तुम उनकी खोई पहचान वापस दिला सकते हो? यही उद्देश्य अपने सामने रखो। बिना धार्मिक आस्थाओं को क्षति

पहुंचाए उनकी उन्नति का कार्य होना चाहिए।

स्वामी विवेकानंद एवं कुटुम्ब प्रबोधन

हम जो कुछ भी हैं, वह हमारे विचारों का परिणाम है। विचार के सृजन का बीज सबसे पहले परिवार के संस्कार रूपी वातावरण मे प्रस्फुटित होता है, जिनके कारण रज, तप और सतगुण व्यवहारिक परिभाषा परिलक्षित करते हुए समाज के निर्माण में मुख्य भूमिका निभाता है। भारतीय समाज में परिवार केवल एक सामाजिक संरचना नहीं है, बल्कि यह एक आध्यात्मिक चेतना और नैतिक केंद्र भी है, जहां बाल्यकाल से संस्कार दिया जाता है। फलस्वरूप संपूर्ण समाज को स्थिरता प्राप्त होती है। स्वामी विवेकानंद ने हिंदू दर्शन के चार आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास) में गृहस्थ आश्रम को सबसे महत्वपूर्ण बताया। एक परिवार की कल्पना तब सार्थक होती है, जब वात्सल्य, प्रेम, करूणा, त्याग, मर्यादा, संयम, नियम की अधिष्ठाता परिवार और समाज की आधारशिला महिलाओं को उचित स्थान प्राप्त होता है। स्वामी विवेकानंद ने माता-पिता की भूमिका को समाज निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि माता-पिता का पहला कर्तव्य यह है कि वह अपने बच्चों को न केवल शिक्षित करें, बल्कि उन्हें नैतिकता और आत्मसम्मान का पाठ भी पढ़ाएं। स्वामी जी का प्रबल मानना था कि बच्चों को अनुशासन, करुणा और आत्मनिर्भरता के संस्कार परिवार से ही मिलते हैं। स्वामी विवेकानंद की स्वदेशी जीवन शैली पर दिया गया उपदेश अत्यधिक प्रासंगिक हो जाता है। उनका आध्यात्मिक शक्ति, आर्थिक आत्मनिर्भरता और शैक्षिक सशक्तिकरण का संदेश एक प्रकाश स्तंभ के रूप में कार्य करता है।

स्वामी विवेकानंद और स्व का भाव

स्वामी विवेकानंद का दृष्टिकोण केवल पुनरुत्थानशील भारत का नहीं था, बल्कि एक ऐसे राष्ट्र का था जो अपनी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को अपनी मुख्य शक्ति के रूप में स्वीकार करे। उन्होंने कहा था कि प्रत्येक राष्ट्र की अपनी नियति होती है, प्रत्येक राष्ट्र का एक संदेश होता है, प्रत्येक राष्ट्र का एक मिशन होता है। उनका भारत के लिए दृष्टिकोण इसकी समृद्ध सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं में निहित था, जो उन्होंने राष्ट्र की शक्ति का आधार माना। उन्होंने कहा कि भारत, हमारी मातृभूमि, धर्म के आधार पर खड़ी है, धर्म ही इसकी रीढ़ है, धर्म ही वह चट्टान है, जिस पर इसका सम्पूर्ण जीवन आधारित है। वह मानते थे कि भारतीय मूल्यों और परंपराओं को अपनाना राष्ट्र पुनरुद्धार के लिए आवश्यक है।

सच्ची प्रगति पश्चिमी सभ्यता की अंधी नकल में नहीं, बल्कि हमारे पारंपरिक ज्ञान, आत्मनिर्भरता और स्वदेशी प्रणालियों के पुनरुद्धार में है। भारत की आध्यात्मिक संपत्ति उसकी सबसे बड़ी पूंजी है और इसे केवल भौतिक प्रगति के लिए खो देना विनाशकारी होगा। भारतीय संस्कृति व्यक्ति के जीवन को एक संपूर्ण इकाई मानती है और धर्म

और राजनीति में कोई भेदभाव नहीं करती। उन्होंने स्वदेशी जीवन शैली को राष्ट्रीय एकता और उत्थान का साधन माना। भारतीय शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार भारत के भविष्य की कुंजी है। वह औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली की आलोचना करते थे क्योंकि यह भारतीयों को उनकी जड़ों से दूर कर रही थी। उन्होंने कहा था कि जब तक भारत की जनता शिक्षित नहीं होगी, उनका भरण-पोषण नहीं होगा और उनकी देखभाल नहीं की जाएगी, तब तक कोई भी राजनीतिक विचारधारा सफल नहीं हो सकती। आज जब हम आधुनिकता की जटिलताओं से जूझ रहे हैं। तो ऐसे में स्वामी विवेकानंद की स्वदेशी जीवन शैली पर दिया गया उपदेश अत्यधिक प्रासंगिक हो जाता है।

स्वामी विवेकानंद और नागरिक कर्तव्य

ऋग्वेद में कहा गया है जो व्यक्ति अपने कर्तव्य में नियुक्त होकर कर्म करता है, वही धार्मिक होता है। 'धार्मिकः कुरुते कर्म यः स्वधर्मे नियुक्तः'(ऋग्वेद 3/21/3) इसलिए निष्पाप भाव से कर्तव्य का निर्वहन करते रहना चाहिए। स्वामी विवेकानंद आध्यात्मिक गुरु के साथ ही प्रबुद्ध विचारक भी थे, जिनके विचारों ने भारत के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों को गहराई से प्रभावित किया। उनके दर्शन में नागरिकों के कर्तव्य, समाज के प्रति दायित्व और राष्ट्र निर्माण की भावना का विशेष स्थान था। उनका मानना था कि प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह अपने राष्ट्र की उन्नति में सक्रिय योगदान दे और सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन करे। यह न केवल व्यक्तिगत उन्नति के लिए आवश्यक है, बल्कि राष्ट्रीय समृद्धि और विश्व कल्याण के लिए भी महत्वपूर्ण है। वर्तमान के संदर्भ में, जब शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता महसूस की जा रही है, उनके विचार यह सीख देते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार पाना नहीं, बल्कि समाज के लिए एक आदर्श नागरिक बनना भी होना चाहिए।

स्वामी विवेकानंद और पर्यावरण

पर्यावरण जीवन का आधार है। यह मानव को वायु, जल, भोजन और आश्रय प्रदान करता है। लेकिन मानवीय गतिविधियों के कारण पर्यावरण की स्थिति गंभीर होती जा रही है। इन परिस्थितियों में स्वामी विवेकानंद के विचार प्रासंगिक हो जाते हैं। स्वामी विवेकानंद ने पर्यावरण को केवल एक संसाधन के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) की एक दिव्य अभिव्यक्ति माना। उनका मानना था कि मानवता और प्रकृति के बीच गहरा संबंध है और मानव को प्रकृति पर प्रभुत्व जमाने के स्थान पर उसके साथ सामंजस्य स्थापित करना चाहिए। उन्होंने कहा था कि जल का धर्म उसकी नमी है, शहद का धर्म उसकी मिठास है, फूल का धर्म उसकी सुगंध है, वायु का धर्म उसका सांस लेना है, अग्नि का धर्म उसकी ऊष्णता है और किसी स्थान का धर्म उसमें निहित पवित्र शक्ति को बनाए रखना है। यह विचार प्रकृति और मानवता की आपसी निर्भरता को दर्शाता है।

उन्होंने इस बात पर बल दिया कि पर्यावरणीय क्षरण केवल एक भौतिक समस्या नहीं है, बल्कि यह एक नैतिक और आध्यात्मिक संकट भी है। उन्होंने चेतावनी दी थी कि यदि मानव जाति प्रकृति के संतुलन का सम्मान नहीं करेगी, तो परिणाम अराजकता के रूप में सामने आएंगे। उनका संदेश स्पष्ट था कि विकास को प्राकृतिक और आध्यात्मिक शक्ति के संसाधनों को नष्ट किए बिना आगे बढ़ना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियां भी इनका आनंद ले सकें। स्वामी विवेकानंद का संदेश सतत विकास की अवधारणा से मेल खाता है। स्वामी जी का पर्यावरण के प्रति के अनूठा प्रेम और दृष्टि ने वर्तमान में भारत को ही नहीं, अपितु पूरे विश्व को संदेश दिया है। आज भारत को विश्व गुरु बनाने और देश के जीने का अवसर युवाओं के सामने है। स्वामी विवेकानंद के जीवन में भारत का वह आत्मविश्वास है, जिसकी आज सबसे अधिक आवश्यकता है। स्वामी विवेकानंद का जीवन ही आज की समस्याओं से निकालकर भारत को विकसित और विश्वगुरु बनने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। ■

(लेखक अभाविप उत्तर-पश्चिम क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन मंत्री हैं।)

दिल्ली विश्वविद्यालय में बिखरे भारतीय कलाओं के सांस्कृतिक रंग

राष्ट्रीय कला मंच, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) और दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डूसू) के सहयोग से तीन दिवसीय सांस्कृतिक महोत्सव मदारी का आयोजन दिल्ली विश्वविद्यालय के कला संकाय में किया गया। महोत्सव के उद्घाटन समारोह में फिल्म अभिनेता मुकेश तिवारी मुख्य अतिथि के रूप में तथा विशेष अतिथि के रूप में अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री देवदत्त जोशी ने हिस्सा लिया।

मदारी सांस्कृतिक महोत्सव में विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित अतिथियों ने हजारों छात्रों के साथ संवाद किया। विभिन्न नाट्य समितियों ने अपने नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किए, जिन्होंने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। महोत्सव में भारतीय संस्कृति को दर्शाने वाली एक विशेष प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसका मुख्य विषय महाकुंभ रहा। प्रदर्शनी का उद्देश्य युवाओं को उनकी संस्कृति और जड़ों से जोड़ने का प्रयास था।

मदारी महोत्सव का शुभारंभ गत 12 फरवरी को हुआ। तीन दिवसीय महोत्सव में चालीस से भी अधिक नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुति हुई, जिसमें थिएटर के पांच सौ से अधिक विद्यार्थियों ने सहभागिता की। इसके अलावा कला प्रदर्शनी में सौ से अधिक विद्यार्थियों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया।

धरोहर के माध्यम से मदारी महोत्सव में भारतीय संगीत गायन, नृत्य, वादन, मिमिक्री, अभिनय जैसी कला विधाओं के माध्यम से सौ से भी अधिक कलाकारों ने सहभागिता करके अपनी-अपनी कलाओं का प्रदर्शन किया। महोत्सव में भारतीय क्रिकेट के अंपायर अनिल चौधरी, फिल्म निर्देशक आनंद एल. राय, अभाविप उत्तर-पश्चिम क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन मंत्री अश्विनी शर्मा, दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ की सचिव मित्रविंदा करणवाल, राष्ट्रीय कला मंच की राष्ट्रीय संयोजक गुंजन ठाकुर और राष्ट्रीय कला मंच दिल्ली के संयोजक अनुपम तिवारी भी उपस्थित रहे।

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ की सचिव मित्रविंदा करणवाल ने बताया कि मदारी केवल एक महोत्सव नहीं, बल्कि कला और संस्कृति का उत्सव है। इसमें छात्रों को अपनी रचनात्मकता को प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है। अभाविप के राष्ट्रीय मीडिया संयोजक हर्ष अत्री के अनुसार नुक्कड़ नाटकों से लेकर संगीत और कविता तक, मदारी में सबके लिए कुछ न कुछ रहा। यह महोत्सव छात्रों को कला के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन और जागरूकता लाने के लिए प्रेरित करता है। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

Cow Protection in India : Constitutional Provisions and Legal Perspectives

■ Dr. Pradeep Kumar

In India, the cow is not merely an animal; it is a symbol of life, sustenance and religious reverence. The cow's cultural and spiritual significance has been deeply embedded in Indian traditions for centuries, especially in Hinduism. This profound reverence for cows is reflected in India's legal framework, notably in the Indian Constitution, which includes specific provisions for their protection. This blog explores the historical, cultural and legal aspects of cow protection in India, with a particular focus on the constitutional provisions and their implementation.

Cows have held a sacred status in Indian culture for thousands of years. In Hinduism, which is the religion of the majority in India, cows are revered as symbols of non-violence and motherhood. The cow is associated with various deities, most notably Lord Krishna, who is often depicted as a cowherd. The ancient texts, including the Vedas and Puranas, extol the virtues of the cow and emphasize its significance in rituals and daily life.The economic importance of cows in rural India cannot be overstated. They provide dairy products, manure and draft power for agriculture, making them indispensable to rural livelihoods. The cow's dung is used as a natural fertilizer and fuel, while its milk is a crucial source of nutrition. The multi-faceted utility of cows has ingrained them deeply into the socio-economic fabric of rural India.

The Indian Constitution, which came into force in 1950, reflects the cultural ethos of the country. The protection of cows is explicitly mentioned in the Directive Principles of State Policy, which, while not enforceable by any court, serve as guidelines for the governance of the country. Article 48 of the Indian Constitution states. "The State shall endeavour to organize agriculture and animal husbandry on modern and scientific lines and shall, in particular, take steps for preserving and improving the breeds and prohibiting the slaughter of cows and calves and other milch and draught cattle."This provision underscores the importance of cow protection as a state policy aimed at improving agriculture and animal husbandry. The framers of the Constitution recognized the cow's critical role in Indian society and sought to enshrine its protection in the nation's highest legal document. Following the constitutional mandate, various states in India have enacted laws prohibiting the slaughter of cows and regulating their protection. These laws vary from state to state, with some states imposing stringent restrictions and penalties for cow slaughter, while others have more lenient provisions.

State-Specific Laws

- Gujarat : The Gujarat Animal Preservation Act, 1954 and its subsequent amendments have imposed strict bans on cow slaughter. Violators can face severe penalties, including imprisonment and fines.
- Uttar Pradesh : The Uttar Pradesh Prevention of Cow Slaughter Act, 1955, prohibits the slaughter of cows and has stringent provisions for offenders.
- Madhya Pradesh : The Madhya Pradesh Agricultural Cattle Preservation Act, 1959, aims to preserve agricultural cattle, including cows, and prohibits their slaughter.
- Kerala and West Bengal : These states have

more relaxed regulations, permitting the slaughter of cows under certain conditions, often considering the religious and cultural diversity of the population.

The differing laws reflect the diverse cultural, economic and social contexts of the states. While some states have strict bans driven by religious sentiments and cultural values, others have adopted a more pragmatic approach, balancing the interests of various communities.The implementation of cow protection laws has not been without controversy. Several issues have arisen, including concerns about religious freedom, the economic impact on farmers and traders, and incidents of violence related to cow vigilantism.

India is a secular country with a diverse population that includes Hindus, Muslims, Christians, Sikhs and others. While cow protection is a significant aspect of Hindu culture, it may not hold the same importance for other communities. The imposition of strict cow protection laws in states with significant non-Hindu populations can lead to tensions and conflicts over religious freedom and cultural practices.The economic implications of cow protection laws are also significant. Farmers and traders who rely on the sale of cattle for their livelihoods may face hardships due to the restrictions on cow slaughter. The economic viability of maintaining non-productive cattle poses a challenge, particularly for small and marginal farmers who cannot afford to keep unproductive animals.

In recent years, incidents of cow vigilantism have garnered attention and criticism. Groups of self-appointed "cow protectors" have taken the law into their own hands, often targeting individuals, particularly from minority communities, suspected of involvement in cow slaughter or beef consumption. Such incidents have led to violence, social unrest and a climate of fear and insecurity.The judiciary in India has played a crucial role in interpreting the constitutional provisions related to cow protection. Several landmark judgments have addressed the complexities of balancing cow protection with fundamental rights, such as religious freedom and the right to livelihood.

- Mohd. Hanif Quareshi v. The State of Bihar (1958): The Supreme Court upheld the validity of cow protection laws, stating that the ban on cow slaughter is in the interest of public welfare and does not violate the fundamental rights of any community.
- State of Gujarat v. Mirzapur Moti Kureshi Kassab Jamat (2005): The Supreme Court reaffirmed the constitutional validity of cow protection laws, emphasizing the importance of cows in India's agricultural economy and cultural heritage.

The judiciary's stance has generally favoured cow protection while recognizing the need to address the concerns of affected communities and individuals.

The discourse on cow protection in India continues to evolve, reflecting the broader dialogue on tradition, modernity and governance. Several policy recommendations can help address the complexities and challenges associated with cow protection laws:

- Scientific and Sustainable Practices : Promote scientific and sustainable practices in animal husbandry to enhance the productivity and welfare of cattle. This includes improving breeding practices, healthcare, and nutrition for cows.
- Economic Support for Farmers : Provide financial incentives and support to farmers for maintaining non-productive cattle. This can include subsidies, insurance schemes, and access to affordable veterinary services.
- Community Engagement : Foster community engagement and dialogue to address cultural and religious concerns. Encourage collaboration between different communities to find mutually acceptable

solutions.

- Regulation and Monitoring : Strengthen the regulatory framework and monitoring mechanisms to prevent illegal cow slaughter and curb vigilantism. Ensure that law enforcement agencies act impartially and uphold the rule of law.
- Public Awareness : Raise public awareness about the importance of cow protection and the legal provisions related to it. Promote educational campaigns that emphasize the cultural, economic and environmental significance of cows.

The protection of cows in India is a testament to the country's rich cultural heritage and the values enshrined in its Constitution. While the legal framework aims to preserve these values, it also brings to light the complexities of implementing such laws in a diverse and dynamic society. The discourse on cow protection continues to evolve, reflecting the broader dialogue on tradition, modernity and governance in India. Balancing cultural sentiments with practical realities remains an ongoing challenge. By adopting a holistic approach that considers the socio-economic, cultural and religious dimensions of cow protection, India can strive to uphold its constitutional principles while fostering harmony and progress. ■

(Author is Associate professor, School of Law Governance and public policy,Chanakya University,Bengaluru)

I कश्मीर I

अभाविप ने किया तिरंगा यात्रा का आयोजन

भारतीय गणतंत्र की हीरक जयंती के अवसर पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) कश्मीर ने श्रीनगर में राष्ट्रीय एकता, एकात्मता एवं परस्पर सद्भाव को बढ़ावा देने के उद्देश्य से तिरंगा यात्रा का आयोजन किया। तिरंगा यात्रा टीआरसी चौक से आरम्भ होकर ऐतिहासिक लाल चौक पर समाप्त हुई।

अभाविप की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद के सदस्य अकील अहमद तांत्रे ने बताया कि 76वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में अभाविप जम्मू और कश्मीर में स्थित जम्मू महानगर, पुंछ, नौशेरा, अखनूर, जम्मू विश्वविद्यालय और गुलमर्ग में तिरंगा सम्मान यात्रा आयोजित की गई। यह राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देने के लिए अभाविप की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

जानकारी हो कि अभाविप का कश्मीर में तिरंगा यात्रा आयोजित करने का लंबा इतिहास रहा है। 1990 के दशक में संगठन ने ऐतिहासिक 'चलो कश्मीर; मार्च का नेतृत्व किया था, जिसमें देश के विभिन्न हिस्सों से दस हजार से अधिक छात्रों ने भाग लिया था। अभाविप कश्मीर में 2021 से वार्षिक तिरंगा रैलियों का आयोजन कर रही है, जिसमें 26 जनवरी 2022 को गुपकार रोड से लाल चौक तक 110 फुट लंबी तिरंगा यात्रा का आयोजन शामिल है। यह अपनी तरह का पहला ऐसा आयोजन था। इसी तरह 15 अगस्त 2021 को, एक

गांव-एक तिरंगा अभियान के दौरान अभाविप ने घाटी के संवेदनशील क्षेत्रों सहित जम्मू और कश्मीर के तीन हजार से अधिक गांवों में उत्साह और जोश के साथ राष्ट्रीय ध्वज फहराया। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

नेपाली विद्यार्थियों को परिसर से बाहर करने का आदेश अनैतिक एवं अमानवीय : अभाविप

नेपाली छात्रा की दुःखद मृत्यु की निष्पक्ष जांच की मांग

ओडिशा में कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (केआईआईटी) विश्वविद्यालय में नेपाली छात्रा प्रकृति लम्साल की दुर्भाग्यपूर्ण मृत्यु पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने गहन शोक व्यक्त किया है। विश्वविद्यालय प्रशासन के गैर जिम्मेदारीपूर्ण आदेश के विरुद्ध अभाविप ने राज्य भर में प्रदर्शन करके अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए घटना की निष्पक्ष एवं विस्तृत जांच की मांग की है।

अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री डा. वीरेन्द्र सिंह सोलंकी ने घटना की निंदा करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा नेपाली मूल की छात्रा द्वारा संदिग्ध हालातों में की गई आत्महत्या पर न्याय की गुहार लगा रहे विद्यार्थियों को दबाने का प्रयास अत्यंत निंदनीय है। विशेष रूप से, नेपाली छात्रों को परिसर खाली करने के लिए दिया गया आदेश न केवल अवैध है, बल्कि यह मानवाधिकारों का गंभीर उल्लंघन भी है, जो भारत-नेपाल के गहरे संबंधों पर प्रहार भी करता है। जो विद्यार्थी न्याय की मांग कर रहे हैं, उनकी आवाज दबाने के स्थान पर प्रशासन को प्रकृति लम्साल की आत्महत्या के कारणों की गहन जांच सुनिश्चित करनी चाहिए। विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा की गई असंवेदनशीलता को देखते हुए इस मामले में शिक्षा एवं गृह मंत्रालय को त्वरित हस्तक्षेप करते हुए सख्त कदम उठाने चाहिए। अभाविप कार्यकर्ताओं ने नेपाली विद्यार्थियों से मिलकर उनको आश्वासन दिया है कि अन्याय के विरुद्ध इस लड़ाई में अभाविप उनके साथ खड़ी है।

अभाविप के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने प्रदर्शन भी किया, जिसके उपरांत प्रशासन ने सभी विद्यार्थियों, जिसमें नेपाली विद्यार्थी भी सम्मिलित हैं, को परिसर में लौटने एवं अपनी शैक्षिक गतिविधियों को जारी रखने का आग्रह किया। घटना को लेकर अभाविप के एक

प्रतिनिधिमंडल ने ओडिशा के उच्च शिक्षा मंत्री सूर्यवंशी सूरज से मुलाकात की और विश्वविद्यालय में हुई दुर्भाग्यपूर्ण घटना में शामिल आरोपियों और नेपाली छात्रों के साथ दुर्व्यवहार करने के आरोपियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की मांग की। मुलाकात के दौरान घटना से आहत नेपाली छात्रों ने शिक्षा मंत्री को अपनी समस्याओं से अवगत कराया। प्रतिनिधिमंडल ने उच्च शिक्षा मंत्री को अठारह सूत्रीय मांग पत्र भी सौंपा।

मुलाकात के दौरान उच्च शिक्षा मंत्री ने छात्रों को आश्वस्त किया कि घटना की गहन जांच कर राज्य सरकार द्वारा कड़ी कार्रवाई की जा रही है। साथ ही आरोपियों के विरुद्ध भी शीघ्र ही कड़ी कार्रवाई की जाएगी। प्रतिनिधिमंडल में अभाविप पूर्वी ओडिशा के प्रदेश मंत्री ढोलमयी प्रतिहारी, पूर्वी ओडिशा के प्रांत संगठन मंत्री बुद्धदेव बाग, राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद सदस्य विश्वजीत पात्रा, पूर्व प्रदेश मंत्री अरिजीत पटनायक, भुवनेश्वर महानगर मंत्री पंकज मोहंती, महानगर सह-मंत्री गंगाधर पाढ़ी शामिल थे। साथ ही कई नेपाली छात्र भी मौजूद रहे। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

Unity and Integrity of the Country Threatened by Divisive Narratives

■ P. Sandeep Kumar

Once again, the language related narratives are used in various parts of the country to create divide among the people. This trend is increasingly palpable in Southern part of the country especially in states like Tamil Nadu, Karnataka and Kerala. The supporters of the language based divisive narratives put up slogans like preservation of local languages with its purity and perceived threat from Hindi to the local language etc. as part of their arguments. Even by a brief glance on the arguments we can understand that the real moto behind their narratives is not the best interest of the local languages or the interest of the people. But political opportunism for short term gains and divisive ideologies imbibed from the colonial masters are at the core of their propaganda. Here it needs to be noted that, they have problemsonly with Hindi an Indian language and they do not have any apprehension about English the language of colonial oppressors, which is systematically killing almost every local language today. In fact, Mahatma Gandhi proposed Hindi as a link language in India to replace English, the language of colonisers. The those who are using the name Gandhi for political opportunism conveniently forget or concealhis wishes in this context.

The ongoing debates in the name of three language proposed in NEP, misrepresenting it as an effort to impose Hindi on South Indian states needs to be seen in this context. Further, the argument of Hindi imposition in the name of three language policy itself is baseless, there is no mandatory provision for Hindi in NEP as far as south Indian states are concerned. Togather support for their propaganda, people like TN chief minister M.K.Stalin argues that Hindi destroyed many local languages in Northern part of India. He also endorsed blackening of Hindi signboards in Tamil Nadu on February 26, 2025 in a social media post.

Apart from the language narratives various other kinds of narratives also pushed by the divisive forces to create confusion and unrest among the public using certain issues. Delimitation is such an issue, some political groups like DMK argue that delimitation will reduce the number of parliamentary constituencies in southern part of India. Stalin is repeating his propaganda, even after the statement of Union Home Minister assuring that the southern states will not lose even a single seat in the process. The lies on delimitation is peddled continuously to instigate people. In fact, for their political gains people like Stalin are fanning separatism in the southern part of the country in the name of language and loksabha seats. The arguments like cutting South, United state of South India etc. needs to be remembered in this context.

Stalin with help of Kerala chief minister Vijayan is in a process to reinvent the Dravidian ideologue E.V. Ramaswami, a divisive figure, who argued for a separate Dravidian nation as an icon of South India. They try to implement this agenda by suppressing or distorting various historical facts and misrepresenting icons like Sree Narayana Guru. Effort to delink Hindu Sanyasi like Sree Narayana Guru from Sanatana fold and the repeated rant against

the Sanatana Dhrama by both the Chief Ministers and their followers demonstrate the ulterior motives behind their propaganda. In reality they are nurturing Hindu phobia and hatred in southern part of India, which may lead to targeted attacks against Hindus in future. Further, such propaganda can also be used to justify such attacks.

Statement by TN deputy CM Udayanidhi Stalin on Sanatana Dharama is a perfect example of this vicious propaganda. According to him Sanatan is a Sanskrit word. Sanatan is against equality and social justice, just opposing it is meaningless; hence, it should be destroyed like mosquitos, Dengue, Cholera and Corona. This hate speech made by Tamil Nadu minister, Udayanidhi Stalin was a great shock for the nation rooted in the principles of Sanatana Dharma since time immemorial. Udhaynidhi made this speech at a Destroy Sanatan Dharma conference organized Tamil Nadu Progressive Writers Association.

It cannot be seen as just a simple statement but as part of a larger agenda. Tamil Nadu progressive writers'association is a communist outfit, which organized the destroy Sanatan conference on 2nd September 2023 at Kamarajar Hall in Chennai. The main purpose of the conference was to discuss about ways to destroy Sanatan Dharma (Hindusim). Discussions were organised on various titles in this conference like, Deadly history of Sanatan Dharma, Ways to Destroy Sanatan Dharma, Sanatan imposition and opposition, etc. Another topic discussed in the in the conference was how to defeating Sanatan Dharma in the political battleground. Anti-Hindu activist and writer Adhavan Deetchanya is currently the state general-secretary of Tamil Nadu Progressive Writers Association and Madhukkur Ramalingam is the state president of the organization. Sanatana Ozhipu Conference (Sanatana Dharma Eradication Conference), held on 2nd September at KamarajarArangam (Kamarajar Hall) in Chennai. A cultural programme, a music event by ultra left activist Kovan and his troupe, book release function, of a book titled Imposition and Opposition of Sanatana written by Professor Ilango and another book titled Vallalar-Controversy and Reality written by K.G. Bhaskaran etc. was part of the conference.

Prominent anti-Hindu politicians such as Tirumvalavan of VCK, S.Venkatesan from Marxist Communist Party and Peter Alphonse from Congress party, participated and addressed the gathering. Apart from Tamil Nadu Sports and Youth Welfare Minister Udhaynidhi Stalin, Tamil Nadu Hindu Religious & Charitable Endowment Board Minister P.K. Shekar Babu, Tamil Nadu Higher Education Minister Ponmudi also made remarks against Sanatana Dharma in the conference. According all these leaders who addressed the conference, eradication of Sanatan Dharma is the prerequisite for upholding social justice, social equality and protection of humanity. Unfortunately, the statement made by Udhaynidhi Stalin only become sensation and attracted the attention of nationl Other ministers and leaders who made the hate speeches were went unnoticed.

The above speech by Udhaynidhi Stalin has ignated massive protest across India. From common people to religious and political leaders expressed their concern over the statement. Thousands of people used the social media platforms to condemn Udhaynidhi Stalin and demanded stern action against Udhaynidhi Stalin for his call for the annihilation of Sanatan Dharma. People even demanded the resignation ofthe ministership and for his disqualification as Member of Legislative Assembly.

Following massive outrage against Udhaynidhi Stalin speech, an eco-system came to defend him as a face-saving measure. Leaders from DMK, Congress and Liberation Panthers Party etc. came to the rescue of Udhaynidhi Stalin by releasing statements saying Udhaynidhi Stalin statement

was misquoted by RSS-BJP supporters. They further said, Udhaynidhi Stalin spoke about eradicating Sanatan Dharma as a Philosophy but RSS BJP supporters twisted his statement and gave genocidal context. One the other hand DMK supporters in social media worked overtime to prove Udhaynidhi Stalin is right by posting old videos of caste violence and statements of E.V. Ramasamy Naicker.

Congress MP Karti Chidambaram also came forward to defend Udaynidhi saying that Sanatana Dharma is nothing but code for a Caste hierarchical society. All those batting for it is hankering for the good old days. Caste is the Curse of India. In the common parlance of Tamil Nadu Sanatana Dharma stands for caste hierarchical society. Why is that everyone who is batting for Sanatana Dharma comes from the privileged segment who are beneficiaries of the Hierarchy. There was no call for genocide anyone, this is a mischievous spin.

Despite the massive backlash, Udhaynidhi Stalin reiterated his stand in a tweet. Bring it on. I am ready to face any legal challenge. We will not be cowed down by such unusual saffron threats. We, the followers of Periyar, Anna and Kalaingar, would fight forever to uphold social justice and establish an egalitarian society under the able guidance of our honorable Chief Minister. I am saying again that I only criticised Sanatana Dharma and that Sanatana Dharma should be eradicated. I will say this continuously. Few are being childish saying that I called for a genocide while others are saying that Dravidam should be abolished. Does that mean DMK cadres should be killed? When PM Modi says 'Congress Mukt Bharat', does that mean congressmen should be killed? What is Sanatana? Sanatana means nothing should be changed and all are permanent. But the Dravida model calls for change and all should be equal. BJP twisting my statement and spreading fake news, it's their usual job. I am ready to face whatever cases they file against me. BJP is scared of the INDI Alliance & to divert that they are saying all this. DMK's policy is One clan, one God.

Member of Parliament and leader of VCK Tirumavalavan, when swing forward to defend Udhayanidhi made the following dubious statement. Dr. B. R. Ambedkar called Sanatana Dharma or Hindu Dharma is a contagious disease. It should be eradicated and annihilated in future. Then only we can attain equality among the people. Hence, Udhayanidhi statement was on the line of the ideology of Periyar and Ambedkar which is equality. Further, it was not against the Hindu community, but was part of a criticism against the Sangh Parivar's agenda. Sangh Parivar agenda is nothing but Hindutva. We are only opposing Hindutva which is the political agenda of BJP and RSS and we are not against Hindus.

On the same time the Tamil Nadu progressive writer's association which organized the destroy Sanatan conference, told that the RSS and BJP have history of twisting facts and spread fake news. Not a single speaker in the conference spoke anything against Hindus or Hinduism at the conference But only spoke against Sanatan Dharma as a Philosophy. In this context, Udhaynidhi Stalin spoke about only eradicating Sanatan Dharma as philosophy but not against Hindus or HinduismI He only spoke about eradicating Sanatan Dharma which is against social justice, equality and humanity. This statement will clearly expose the strategy and duplicity of the communists and anti-Hindu ecosystem as far as the destroy Sanatana is concerned. Effort to portray Sanatana Dharma and Hinduism, Hindutva as different entities in not accidental but part of a clear strategy. Further they also try to divide the people in the name region, R.T. Muthu, a Functionary of Tamil Nadu Progressive Writers Association asserted that, it was the North Indian Sanghis who filed cases against Udayanidhi following his statement.

While considering a petition in connection

with the hate speech made by Udayanidhi Stalin against Sanatana Dharma. Justice G. Jayachandran of the Madras High Court, has pointed out that the Tamil Nadu police failed in their duty by not taking action against Sports Minister Udhayanidhi Stalin and Hindu Religious and Charitable Endowments Minister P. K. Sekarbabu for their participation in a conference aimed at the "Annihilation of Sanatana Dharma" in Chennai on 2 September 2023.

Following the hate speech by Udayanidhi, he faced a criticism for targeting the Hindu beliefs, his part colleague and MP A. Raja made even more harsh statement on Sanatana Dharma. On 7 September A. Raja said that Sanatana Dharma should be compared to diseases carrying social stigma such as HIV and leprosy. He further added that the statement of Udhayanidhi Stalin on Sanatana Dharma was soft, there is no social stigma attached to Dengue and Malaria. Sanatana Dharma and Viswakarma Yojana launched by the PM are one and the same he added.

Further on the occasion of EV Ramasamy Naicker birth anniversary, Anti-Hindu Dravidian organizations organized Eradicate Sanatan rally and meetings all over TamilNadu. The rallies were conducted at Erode, Karaikudi, Coimbatore, Tiruppur etc. Functionaries from Anti-Hindu organizations, political parties and activist participated in the rallies. Representatives from Muslim organizations participated in Eradicate Sanatan rallies in large numbers. Apart from rallies and meetings, signature campaign to Eradicate Sanatan Dharma was also organized. Interestingly, as so-called symbol of opposition against Sanatana, free beef biriyani was served for the public.

The statement made by Udayanidhi on Sanatana was not the first of such remarks. Recently, reacting to a statement by Tamil Nadu Governor R.N. Ravi on Dravidian ideology, Tamil Nadu Chief Minister M.K. Stalin stated that the Dravidian ideology effectively neutralized the Sanatana Dharma and Aryan ideology. This is not the first time Stalin is speaking about the defeat of Sanatana Dharma.

On 6th March 2023, M K Stalin and Kerala chief minister Pinarayi Vijayan attended the 200year celebration of the so-called upper cloth rebellion in Nagarkovil, Kanyakumari district Leader of extremist political outfit VCK and a member of parliament, Tirumavalavan was also present in the meeting. All these leaders in their speech tried to brand Sanatana Dharma as an evil force and single most reason of all kind of vices in the Indian society. It was depicted as a cruel ideology, which is still used as tool to establish socio-political hegemony and oppression. Therefore, in the opinion of these leaders Sanatana Dharma need to be defeated at any cost.

M.K. Stalin and Pinarayi Vijayan not only alleged that the Sanatana Dharma deprived lower caste women right to cover their bosom but alleged that the Travancore state which followed Sanatana Dharma levied tax on the breast of lower caste women. Further, they said that to mark her protest against this draconian taxation a woman was removed her breast and become a symbol. It needs to be reiterated that the above statement of the two chief ministers is nothing but blatant lies propagated to create social division.

The above arguments and activities orchestrated by some of the political parties and other outfits in the southern part of India pose a serious threat not only for law and order but social cohesion. The roots of most of the above arguments can be traced back to colonial period and the theories manufactured then by the colonial forces to implement their divide and rule policy. Considering the possible impact of such arguments and activities on the unity and integrity of the country, we must come forward to condemn such tendencies to uphold the unity and integrity of the country. ■

(Author is Director of CSIS)

शिक्षा विरोधी प्रदेश सरकार के विरुद्ध अभाविप ने छेड़ा अभियान

राज्य के शिक्षण संस्थानों में बिगड़ती कानून व्यवस्था की जिम्मेदार कांग्रेस सरकार के विरुद्ध अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने अभियान छेड़ दिया है। अभियान के तहत राज्य के कई स्थानों पर धरना-प्रदर्शन करके अभाविप ने सुक्खू सरकार के विरुद्ध शिक्षा क्षेत्र की अनदेखी करने और कानून-व्यवस्था के मामले में असफल होने का आरोप लगाया।

राज्य सरकार की शिक्षा विरोधी नीतियों एवं कार्यों के विरोध में सुजानपुर महाविद्यालय इकाई ने 24 घंटे की सांकेतिक भूख हड़ताल की। अभाविप सुजानपुर इकाई के अध्यक्ष आदित्य चंदेल ने बताया कि प्रदेश के शैक्षणिक परिदृश्य को कांग्रेस सरकार ने बदहाल बना दिया है। अभाविप ने विभिन्न मुद्दों को लेकर राज्य भर में गत 13 फरवरी से 14 फरवरी तक धरना-प्रदर्शन करते हुए सांकेतिक भूख हड़ताल की। राज्य सरकार प्रदेश के विश्वविद्यालयों में अभी तक स्थाई कुलपति की नियुक्ति नहीं कर पाई है। परीक्षा परिणाम में अनेकों अनियमितताएं निरंतर सामने आ रही हैं। छात्रसंघ चुनाव काफी लंबे समय से बंद है। कई शिक्षण संस्थान आज भी मूलभूत सुविधाओं और अपने भवन निर्माण से जुडी समस्या से जूझ रहे हैं। पर्यटन ग्राम के नाम पर वर्तमान सरकार द्वारा कृषि विश्वविद्यालय की 112 हेक्टेयर भूमि को हड़पने का प्रयास किया जा रहा है, जो छात्रों के हित में नहीं है।

कुल्लू में मुख्यमंत्री के पुतला दहन में हुआ टकराव

कुल्लू जिला मुख्यालय ढालपुर में अभाविप कार्यकर्ताओं ने मुख्यमंत्री सुक्खू का पुतला जलाने का प्रयास किया। इस दौरान अभाविप कार्यकर्ताओं और पुलिस के बीच झड़प हुई। पुलिस ने दो बार पुतले को अपने कब्जे में लिया, लेकिन बाद में प्रदर्शनकारी छात्रों ने कुछ कपड़े और कागज जलाकर अपना आक्रोश व्यक्त किया। तनाव के बीच पहुंचे उप जिलाधिकारी ने बीच-बचाव किया, लेकिन पुलिस प्रशासन के विरोध में छात्र धरने पर बैठ गए। बाद में छात्रों ने पुलिस से माफ़ी मांगने की मांग की।

अभाविप के अनुसार सभी छात्र अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन कर रहे थे। शांतिपूर्ण प्रदर्शन के समय पुलिस ने आकर माहौल को खराब किया। पुलिस के साथ हुई झड़प में कई छात्र-छात्राओं को गंभीर चोटें लगी।

शिमला में उपायुक्त कार्यालय के बाहर प्रदर्शन

अभाविप शिमला ने उपायुक्त कार्यालय के बाहर प्रदर्शन कर कड़ा विरोध व्यक्त किया। अभाविप कार्यकर्ताओं ने प्रदेश की सरकार के विरोध में प्रदर्शन करते हुए चेतावनी दी है कि अभाविप की समस्त मांगों को पूरा किया जाए। अभाविप हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय इकाई अध्यक्ष हनी शर्मा ने बताया कि जिस प्रकार प्रदेश सरकार शिक्षण संस्थानों की तालाबंदी कर रही है, वह शिक्षा के स्तर को गिराने वाला काम है। अभाविप कड़े शब्दों में इसका विरोध करती है। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में सैकड़ों छात्र शोध कार्य कर रहे हैं। लेकिन उनकी आर्थिक सहायता के लिए छात्रवृत्ति नहीं दी जा रही है। पूर्ववर्ती सरकार द्वारा शोध छात्रवृत्ति को बहाल किया गया था। लेकिन वर्तमान सरकार इसमें असमर्थ साबित हो रही है। आर्थिक सहयोग न होने के कारण शोधार्थियों को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। अभाविप मांग करती है कि जल्द से जल्द राज्य विश्वविद्यालय मे शोध करने वाले शोधार्थियों को छात्रवृत्ति दी जाए।

हमीरपुर में सरकार की लापरवाही के विरुद्ध प्रदर्शन

अभाविप द्वारा गांधी चौक हमीरपुर एवं उपायुक्त कार्यालय के बाहर धरना-प्रदर्शन किया गया। अभाविप द्वारा सब्जी मंडी से लेकर गांधी चौक तक रैली निकाली गई। प्रदर्शन की जानकारी देते हुए हिमाचल प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय के अध्यक्ष भवानी ठाकुर ने कहा कि अभाविप द्वारा आयोजित धरना-प्रदर्शन प्रदेश की गूंगी-बहरी लापरवाह सरकार के विरुद्ध है, जो हजारों छात्रों की आवाज को अनसुना कर रही है। जिस प्रकार प्रदेश सरकार शिक्षण संस्थानों की तालाबंदी कर रही है, वह शिक्षा के स्तर को गिराने वाला रवैया है। सरकार विभिन्न शिक्षण संस्थानों में अपने राजनीतिक लाभ हेतु तालाबंदी कर रही है, जिसका अभाविप कड़े शब्दों में विरोध करती है।

नशे के कारण अंधकार में युवाओं का भविष्य

अभाविप हिमाचल प्रदेश की प्रदेश मंत्री नैंसी अटल ने बताया कि राज्य में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण युवाओं का भविष्य अंधेरे में है। अभाविप द्वारा इसका विरोध पहले से ही किया जा रहा है। लेकिन राज्य सरकार नशे के व्यापार को रोकने के लिए कोई ठोस कदम उठाने में असफल सिद्ध हो रही है। प्रदेश में बढ़ती नशा तस्करी एवं युवाओं में नशाखोरी एक चिंता का विषय है। प्रदेश में सामाजिक, सरकारी और गैर सरकारी संगठनों द्वारा किए गए सर्वेक्षणों के अनुसार औसतन 35-36 प्रतिशत लोग नशे से पीड़ित हैं। नशे का सबसे बड़ा कारण अकेलेपन का शिकार होना, बच्चों को अभिभावकों द्वारा अकेले छोड़ देना और संपर्क एवं विश्वास कायम नहीं करना है। पुलिस द्वारा नशा तस्करी रोकने के प्रयास सफल नहीं हो रहे हैं। अभाविप नशा माफिया के पूरे गठजोड़ पर करारी चोट करते हुए उनके विरूद्ध कठोर कार्रवाई करने की मांग करती है, ताकि देश का वर्तमान और भविष्य दोनों सुरक्षित हो सके। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

सुधी पाठकों !

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' मार्च 2025 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई-मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

संभाजी राजे के अदम्य शौर्य की वीर गाथा है फिल्म 'छावा'

■ विष्णु शर्मा

छत्रपति शिवाजी शेर, तो शेर का बेटा मराठी में कहलाता है 'छावा' यानी संभाजी राजे भोंसले, जिनके विषय में किसी स्कूली पुस्तक में पढ़ाने से परहेज किया जाता रहा है। 'छावा' भी 'पानीपत' की तरह हार की कहानी है, जिसकी पराकाष्ठा धोखे और पराजय के बाद असीम दर्द पर समाप्त होती है। फिल्म के निर्माता-निर्देशक ने विक्की कौशल और अक्षय खन्ना जैसे दमदार अभिनेताओं को मुख्य भूमिका और उनके सहयोगियों की भूमिका में आशुतोष राणा, विनीत सिंह, दिव्या दत्ता, रश्मिका मंदाना, अनिल जॉर्ज जैसे कलाकारों को शामिल करके अत्यंत प्रभावशाली बनाया है।

कहानी वीर शिवाजी की मृत्यु के बाद से प्रारम्भ होती है। औरंगजेब यह सोचकर उत्सव मनाता है कि दक्षिण में अब मुगलों के सामने कोई चुनौती नहीं बची, लेकिन मुगलों के गढ़ बुरहानपुर पर हमला करके संभाजी राजे ने उसे गलत साबित कर दिया। ऐसे में औरंगजेब सेना लेकर फिर से दक्षिण का रुख़ करता है। लेकिन संभाजी लगातार छापामार युद्ध शैली से औरंगजेब की टुकड़ियों को नष्ट करते हैं। फिल्म बताती है कि नौ वर्षों के दौरान संभाजी ने मुगलों की आधी सेना को साफ कर दिया। ऐसे में मुगल सैनिकों को मारने वाले छत्रपति शिवाजी के वीर बेटे को स्कूली इतिहास से गायब रखना हैरानी पैदा करता है।

शिवाजी की मृत्यु के बाद पहले संभाजी की सौतेली मां सोयरा बाई (दिव्या दत्ता) की साजिशें उनके लिए समस्याएं पैदा करती हैं। बाद में उनकी पत्नी येशुबाई (रश्मिका मंदाना) के दोनों भाई जो संभाजी से नाराज़ थे, भी औरंगज़ेब से हाथ मिला लेते हैं। औरंगजेब अपने विद्रोही बेटे अकबर को संभाजी द्वारा शरण

दिए जाने से भी नाराज था। जब येशुबाई के भाई उसे बता देते हैं कि संभाजी केवल 150 सैनिकों के साथ संगमेश्वर में मौजूद है तो औरंगज़ेब की सेना धावा बोलकर संभाजी और उनके मित्र कवि कलश (विनीत सिंह) को पकड़कर औरंगजेब के सामने पेश करती है। फिल्म में आगे की कहानी अत्यंत भावनात्मक एवं और दर्दनाक है।

फिल्म का सबसे मजबूत पक्ष आम आदमी की इस कहानी में रुचि का होना है। सम्भाजी की वीरता, दर्द और उनके संघर्ष के बारे में देश में ज्यादातर लोगों को जानकारी नहीं थी, लेकिन फिल्म में विक्की कौशल ने संभाजी के चरित्र को दमदार तरीके से यादगार बना दिया। शिवाजी की सारी कहानियां आम लोगों को याद हैं, लेकिन उनके बेटे संभाजी के साथ यह सब हुआ था और वह इतने वीर थे, यह जानना बहुतों को हैरत में डालता है और फिल्म का मध्यांतर के बाद का हिस्सा अत्यंत भावनात्मक है। विशेष बात यह भी है कि जिस आत्मसम्मान के साथ बिना चीखे-चिल्लाए, केवल मां जगदम्बा के नाम के सहारे संभाजी को यातनाओं को झेलता हुआ दिखाया गया, उससे सबके मन में उनके

लिए सम्मान और भी बढ़ गया है। इसके लिए निर्देशक लक्ष्मण उतेकर बधाई के पात्र हैं।

फिल्म में जब बूढ़ा औरंगजेब मन की जलन को छुपाता हुआ यह कहता है कि काश! उसके पास भी कोई ऐसा योद्धा होता तो संभाजी राजे की इज्जत और भी बढ़ जाती है। औरंगजेब ने संभाजी के सामने तीन शर्तें रखी थीं, जिसमें आखिरी शर्त इस्लाम स्वीकार करने की थी, जिसे संभाजी ने मानने से अस्वीकार कर दिया। तभी औरंगजेब ने उनको यातनाएं देकर मार दिया था। फिल्म में यातनाएं पहले हैं और इस्लाम स्वीकार करने की शर्त को बाद में दिखाया गया है। स्पष्ट है कि फिल्म के निर्माता-निर्देशक औरंगजेब के हिंदू विरोधी पक्ष को कमजोर ही रखना चाहते थे। इसी तरह संभाजी के हिंदू हितैषी पक्ष को भी कई संवादों के माध्यम से कमजोर किया गया। फिल्म में रामसेज किले की मुगलों द्वारा पांच माह की सफल घेराबंदी और रायगढ़ किले की घेराबंदी में मुगलों ने कैसे मात खाई? यह नहीं दिखाया गया है, जबकि इन दोनों घटनाओं से आज की पीढ़ी यह जान लेती कि औरंगजेब को संभाजी ने आमने-सामने के युद्ध में कैसे मात दी थी। फिल्म में संगीत ए. आर. रहमान का है और गीत इरशाद कामिल ने लिखे हैं, लेकिन दोनों ही मराठी मानुस और संगीत दोनों को समझने में नाकाम रहे। इसके बाद भी फिल्म के माध्यम से संभाजी के अदम्य शौर्य और दर्दनाक लेकिन शौर्यपूर्ण बलिदान के बारे में देश के बच्चे-बच्चे को पता चल रहा है और उनके मन में जो श्रद्धा पैदा हो रही है, उससे फिल्म की यह कमियां अनदेखी की जा सकती हैं। ■

(समीक्षक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

। निर्देश ।

'संविधान की मूल प्रामाणिक प्रति ही मिले बाजार में'

भारतीय संसद के उच्च सदन राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने स्पष्ट किया है कि संविधान निर्माताओं द्वारा हस्ताक्षरित और भारत की प्राचीन संस्कृति को प्रदर्शित करने वाले 22 लघु चित्रों वाली प्रति ही संविधान की एकमात्र प्रामाणिक प्रति है। इस प्रति में केवल संसद द्वारा संशोधन को ही जोड़ा जा सकता है। इसलिए केंद्र सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि संविधान की प्रामाणिक प्रति का ही प्रकाशन (डिजिटल मीडिया सहित) होना चाहिए और इसमें किसी भी तरह के उल्लंघन को गंभीरता से लेते हुए कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जानी चाहिए।

संसद कार्यवाही के दौरान राज्यसभा में गत 11 फरवरी को शून्यकाल के समय भाजपा के एक सदस्य द्वारा उठाए गए मामले में सभापति धनखड़ ने यह व्यवस्था देते हुए कहा कि केंद्र सरकार सुनिश्चित करेगी कि मूल संविधान की प्रति ही बाजार में उपलब्ध हो। आज देश का आम नागरिक हो या फिर विधि शास्त्र का छात्र, अगर वह भारत के संविधान की प्रति बाजार में खरीदने जाता है तो उसे वह मूल प्रति नहीं प्राप्त होती है, जिस पर 26 जनवरी 1949 को संविधान निर्माताओं ने हस्ताक्षर किए थे। उन्होंने कहा कि संविधान के साथ असंवैधानिक तरीके से खिलवाड़ किया गया और इसके कुछ प्रमुख हिस्सों को निकाल दिया गया। लेकिन संविधान के संस्थापकों की तरफ से हस्ताक्षरित 22 लघु चित्रों वाली प्रति ही एकमात्र प्रामाणिक संविधान है। इसलिए केंद्र सरकार यह सुनिश्चित करे कि देश में भारतीय संविधान का केवल प्रामाणिक संस्करण ही प्रकाशित और प्रचारित हो। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

छात्राओं के शोषण तथा मतांतरण के विरुद्ध अभाविप का राज्यव्यापी प्रदर्शन

सीबीआई से जांच कराकर दोषियों को फांसी देने की मांग

राजस्थान के व्यावर जिला स्थित विजयनगर में जेहादी मानसिकता वाले तत्वों द्वारा स्कूली छात्राओं के यौन शोषण तथा मतांतरण के घृणित प्रयास के विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) कार्यकर्ताओं ने राज्यभर में धरना-प्रदर्शन किया। अभाविप ने घटना की सीबीआई जांच करने एवं दोषियों को फांसी की सजा देने की मांग की है।

अभाविप ने घटना को अत्यंत शर्मनाक बताते हुए कहा है कि नाबालिग बालिकाओं का भयादोहन कर उनका सामूहिक यौन शोषण तथा उन्हें जबरन मतांतरित करने के सुनियोजित कुत्सित प्रयास की इस घटना में ऐसी कठोर कार्रवाई होनी चाहिए, जिससे पांथिक उन्माद का समूल उन्मूलन हो सके। अभाविप ने घटना में संलिप्त सभी आरोपियों के विरुद्ध कठोरतम कार्रवाई सुनिश्चित करने की मांग की है।

पांथिक उन्माद की कुत्सित मानसिकता से ग्रस्त तत्वों द्वारा अंजाम दी गई घटना की निंदा करते हुए अभाविप चित्तौड़ प्रांत मंत्री जितेन्द्र लोधा ने कहा कि यह घटना अजमेर में हुए सोफिया कालेज कांड की भयावह स्मृतियों को ताजा करने वाली है। इसलिए शीघ्र न्याय सुनिश्चित होना चाहिए। साथ ही ऐसी घटनाओं में जिस प्रकार की मध्ययुगीन महिला विरोधी मानसिकता काम कर रही है, उसका हर स्तर पर कड़ा प्रतिकार होना चाहिए। नाबालिग बालिकाओं का जीवन बर्बाद करने के ऐसे प्रयासों की पुनरावृत्ति न हो, इसलिए प्रशासन के साथ समाज को भी सजग रहना होगा।

क्या है मामला

राजस्थान के ब्यावर जिले में दिल दहला देने वाले मामले में नाबालिग लड़कियों के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया गया। पीड़ित लड़कियों के परिजनों ने आरोप लगाया कि सुनियोजित रूप से एक गिरोह में शामिल आरोपियों ने उनकी बच्चियों के साथ दुष्कर्म किया। गिरोह में शामिल तत्व नाबालिग लड़कियों को मोबाइल, खिलौने और अन्य प्रलोभन देकर उनका शोषण करते रहे। मामला सामने आने के बाद पुलिस सात आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। पुलिस ने पांच आरोपियों की पहचान रिहान मोहम्मद, सोहेल मंसूरी, लुकमान उर्फ सोहेब, अरमान पठान और साहिल कुरैशी के रूप में की, जबकि दो अन्य नाबालिग भी हिरासत में लिए गए हैं।

अवैध मतांतरण का दबाव

पीड़ित लड़कियों के परिजनों के अनुसार उनकी बेटियों को मुस्लिम युवकों ने मोबाइल दिए थे। इसके बाद दबाव और भयादोहन करके उनका देह शोषण किया गया। अश्लील फोटो-वीडियो बनाकर जेहादी तत्व लड़कियों को जबरन कलमा पढ़ने, रोजा रखने और मतांतरण के लिए भी विवश कर रहे थे। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा-2025

अजमेर : राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी के साथ सील प्रतिनिधि, सील ट्रस्टी श्रीकांत केजरीवाल एवं अभाविप पदाधिकारी

मैसूर : केंद्रीय भारी उद्योग एवं इस्पात मंत्री एच. डी. कुमार स्वामी के साथ सील प्रतिनिधि, अभाविप पदाधिकारी एवं अन्य गणमान्य अतिथि

RNI NO.: DELBIL/2017/73636
DATE OF POSTING: 10-11 MARCH, 2025
DATE OF PUBLISHING: 8 MARCH, 2025

POST OFFICE: NDGPO, NEW DELHI
POSTING REGISTRATION NO. DL(C)-11/1409/2024-26

राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा - 2025

नई दिल्ली : उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, पूर्व केंद्रीय मंत्री वी. मुरलीधरन के साथ सील प्रतिनिधि एवं अभाविप पदाधिकारी

जम्मू : उपराज्यपाल मनोज सिन्हा के साथ सील प्रतिनिधि एवं अभाविप पदाधिकारी